सुष्मिता सन्याल की डायरी

हरेन्द्र कुमार

सुष्मिता सन्याल कऽ डायरी

भोजपुरी उपन्यास

सुष्मिता सन्याल कऽ डायरी

भोजपुरी उपन्यास

हरेन्द्र कुमार

लेखक : हरेन्द्र कुमार

© हरेन्द्र कुमार

प्रकाशन वर्ष : नवम्बर, 2007

प्रकाशक : पी. एस. प्रकाशन
123, बसाक बागान
कोलकाता - 700 048

मूल्य : 50/-

आपन बात

साँच कहानी से भी विचित्र होला। काहे कि—साँच बोले आ सुने के ताकत आदमी में ना होला। झूठ खातिर कवनो मापदण्ड नइखे—एही से झूठ हमेशा पूर्ण होला।

लेकिन साँच हमेशा अर्द्धसत्य होला काहे कि साँच कहावे खातिर ओकरा सामाजिक मापदण्ड के मुताबिक होखे के पड़ेला। तऽ इ कहानी भी अर्द्धसत्य ही बा।

भोजपुरी में लिखे खातिर हमार आपन स्वार्थ निहित बा। हमरा दूसरा कवनो भाषा में लिखे में हमेशा डर लागल रहेला। आ भोजपुरी माई के गोद जइसन बा। हम जानतानी कि भले माई से दूर बानी, बहुत दूर, लेकिन उनके पास जाइब त उ हमरा के डटहीन ना हमार गल्ती माफ कर दीहन।

—हरेन्द्र कुमार

एक

परिवार अदालत

अलीपुर

कोलकाता

केस संख्या 76/1987

श्रीमती सुष्मिता सान्याल

बनाम

डॉ. अजितेश लाहिड़ी

आदेश तारीख 13.09.1989 (बुधबार)

दुनो पक्ष के प्रार्थना स्वीकार करके,
ई अदालत उक्त केश बंद करे के हुक्म देता।

हस्ताक्षर

(गोपा बसु)

जज

बस ईतने सा लिखल कागज सुबेश लाहिड़ी खातिर पहाड़ बनके खड़ा भइल रहे। सुबेश लाहिड़ी मध्यप्रदेश कैडर के आई.ए.एस. अधिकारी रहलन 2009 बैच के। 2028 में उ भारत सरकार के कानून मंत्रालय में सह सचिव (Joint Secretary) के पदभार संभालत रहलन। देश के ईनल-गिनल उच्च अधिकारी में उनकर नाम गिनाव। कवनो समस्या के चुटकी में समाधान निकाले में उनकर जोड़ ना रहे।

एक दिन कानून मंत्री आ सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के साथ उ बईठल रहस। सरकारी विषय पर बातचीत करीब-करीब खत्म हो आईल। तभी मंत्री जी के न जाने का मन में आईल, कह भईलन न्यायाधीश महोदय, आप सब खाली कानून के दाव पेंच ही चलाईब ना कुछ जनमुखी कार्यक्रम भी बनाईब। मुख्य न्यायाधीश अपना स्वाभाविक तरीका से उत्तर दीहलन—

ओकरा खातिर त अपने सभन बानी। यदि आपके मन में कुछ होखे त बतावल जाय। मंत्री जी संगे-संगे सुबेश के ओर निहरलन। सुबेश के दिमाग तेजी से चले लागल॥ अगिला साल वोट होखेवाला बा। मंत्री जी क नजर जरूर कवनो अईसन जगह बा जहां भरपुर प्रचार के गुंजाईश होखे। सुबेश अभी सोंचते रहस कि मंत्री जी के आवाज आईल—

अरे आप दूनो के त हम, लागता फेर में डाल दीहनी। माफी चाहत बानी। हमारा कहे के मतलब रहे कि कानून समाज के ज्वलंत समस्या के स्वस्थ समाधान खातिर बहुत कुछ कर सकता। अब देखल जाय तलाक क दर केतना बढ़ल जाता। जदि अइसहीं चलल त शादी से ज्यादा तलाक

होखे लागी। परिवार अदालत कानून 1984 में बनल रहे लेकिन ओकरा बाद एह क्षेत्र में ज्यादा कुछ नइखे भईल। त हमरा कहेके मतलब बा कि एह दिशा में कुछ करे के सोची सभें।

न्यायाधीश महोदय का सोचले इ तऽ ना पता चलल, बाकिर सुबेश के समझे में कवनों कुछ बाकी ना रहल। उ संगे-संगे कहलन— सर, महीना भर में हम एगो प्रस्ताव तैयार करतानी।

मंत्री जी अच्छी तरह से जानत रहस कि सुबेश लाहिड़ी के एक महीना माने 30 दिन होला-31 ना। उनका चेहरा पर एगो संतुष्टि के भाव फईल गईल। न्यायाधीश महोदय सुबेश से पूछलन 'हमरा तरफ से का करे के परी।' "आपके कार्यालय से एगो विज्ञप्ति निकाल दीहल जाय कि देश के प्रत्येक परिवार अदालत में अब तक केतना तलाक के मुकद्दमा दायर भईल। मुकद्दमा के बारे में टिप्पणी के साथ पूरा विवरण मंत्रालय में एक सप्ताह में आ जाय के चाहीं।"

मंत्री जी संग - संग न्यायाधीश महोदय की ओर मुखतिब भइलन— "हां प्रधान मंत्री जी से आपके कार्यक्रम के बारे में चर्चा आजए भईल ह। आप जाये के तैयारी करीं।" 'हेग' में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन होखे के रहे जवना में जाये खातीर न्यायाधीश महोदय के खूब इच्छा रहे।

दो

ठीक दू सप्ताह बाद सुबेश लाहिड़ी आपन कम्प्युटर खोलके बईठलन। बाहर लाल बत्ती जल गईल। माने ई एक घंटा ऊ ऑफिस के विशेष काम करे में व्यस्त बाड़ें।

कम्प्युटर कैलेंडर में अपने आप नोट पेज आईल। फिर माउस क्लिक से ऊ परिवार अदालत बाक्स दबवले। लिखल आईल— राज्यवार ब्यौरा संलग्न एक्सेल सीट में।

माउस क्लिक— राज्यन के लिस्ट। प्रत्येक का सामने दू गो बाक्स बनल रहे। एगो ग्राफिक डाटा आ दूसर विस्तार डाटा खातिर पहिले ग्राफिक डाटा दबलन सुबेश। प्रत्येक राज्य के साल का अनुसार ग्राफ रहे। ओकरा संगे सारा भारत के ग्राफ भी रहे जवना से बुझात रहे कि ऊ राज्य में तलाक के दर सारा देश के तुलना में ज्यादा बा कि कम। एक-एक कर के प्रत्येक राज्य के ग्राफ सुबेश देखे लगले। आई आई टी के छात्र रहलन सुबेश। उनका खातिर ग्राफ आ गणितीय वर्णन स्वाभाविक तौर पर बड़ा ही सरल रहे। बीसवीं सदी आ इकीसवीं सदी के अंतर साफ बुझात रहे। जहां बीसवीं सदी में ग्राफ एक्स-अक्ष से सटल रहे वहीं इकीसवीं सदी में ऊपर की ओर तेजी से बढ़ल जात रहे। दोसर बात आउर दीखत रहे। 2010 तक जवना राज्यन में तलाक ना के बराबर रहे उहां बाद के सालन में ग्राफ करीब-करीब (y) वाई अक्ष में समानांतर हो गइल रहे।

"अरे बाप रे।" हठात सुबेश के मुंह से निकलल। लागता देश से एक पति—एक पत्नी सिद्धांत खतम होखे वाला बा। मंत्री जी के प्रति पहिला बार उनका मन में अच्छा विचार आइल। ई नेता लोग वाकई देश के समस्या के तरफ नजर राखेला। नौकरी पेशा लोग के दिन त हाय कैरियर! हाय कैरियर! करे में बीत जाला।

उ कुर्सी से उठलन। एक बार खड़ा होके देह सीधा कइलन। फ्लास्क से कप में काफी ढाल के पीयल शुरु कइले। दू तीन चुस्की के बाद फिर से कुर्सी पर बइठलन। उनकर हाथ अपने आप माउस क्लिक से खेले लागल।

अबकी बार राज्यवार तालिका प्रत्येक साल के तालिका अलग रहे। कालम बनल रहे—

(1) केस संख्या तारीख का साथ

(2) वादी पक्ष

(3) प्रतिपक्ष

(4) फैसला के तारीख

(5) फैसला

(6) अभ्युक्ति (रिमार्क)

फैसला वाला कालम तीन भाग में बटल रहे—

तलाक स्वीकार। तलाक अस्वीकार। जवन वापस लीहल गइल। वापस लिहल केश परफरमा भी सुबेश लाहिड़ी ही बना के देहले रहस। एकबार फिर से राज्यवार डाटा खोले लगलन। एक-एक कर के राज्य आवे लागल आंध्र प्रदेश, अरुणाचल, असम, छत्तीसगढ़—सुबेश के आपन राज्य। कुछ

देर खातिर सुबेश के दिमाग में आपन शहर रायपुर घुमे लागल। रायपुर के एकमात्र पब्लिक स्कूल सेंट थामस में उनकर 14 साल गुजरल रहे—नर्सरी से बारह तक। 1989 से 2003 तक। ना, अभी समय नईखे सोचे के। आपन सर झटकलन। अपना बाबा के बात अनायास दुहरा देहले''

Never look behind boys
when you are on the way
Time enough for that boys on some future day

(रास्ता जब ठीक लागे पीछे मुड़ के मत देख बच्चा ओकरा खातीर काफी समय मिली तहरा भाविष्य में)

सुबेश के अंगुली माउस क्लिक कर दीहलस दोसरा राज्य के डाटा कम्प्युटर स्क्रीन पर आ गईल। फिर दोसर।

सबसे आखिर में पश्चिम बंगाल। सुबेश एकबार सोचलन। ना जाने बंगाली सब के का बुद्धि बा। कलकत्ता के कोलकाता बनावे खातिर लगातार आंदोलन भइल रहे। लेकिन बेस्ट बंगाल ना बदलल। दु:ख के बात इहे रहे कि बंगाली होके भी सुबेश न त बंगला बोल सकस रहस न लिख सकस। बंगाली भाषा में उ सिर्फ मां आ बाबा छोड़ के कुछ न बोल सकस। शुरु में जब दोसर लड़ीका मॉम-डैड या मम्मी-पापा कहके अपना माता-पिता के संबोधन करस त उनकर मां-बाबा कहल उन्नीसवीं सदी के संबोधन जइसन सुनाव। लेकिन, सुबेश खातिर उ मां-बाबा संबोधन भगवान के नाम जइसन रहे। ईतना उपर अइला के बाद भी उनका मुंह से अनायास मां शब्द ही निकलेला।

आई-आई टी के दिन में उनका के चिढ़ावल जाय इ कहके कि—आ आ गइले मां के आंचल से।

अइसही छोट-छोट याद ही आदमी के जिंदा राखेला। चाहे काम के बोझ में दबल रहे या फुर्सत में। यादन के एक बार फिर से झटक के सुबेश डाटा पर मन स्थिर कइले।

बंगाल के ग्राफ में बड़ा अंतर रहे। शुरु के दिन में तलाक के ग्राफ पूरा भारत के तुलना में उपर रहे लेकिन उ नीचे चले लागल रहे। केसन के लिस्ट पर नजर दौड़ावे लगलन। लिस्ट नीचे से उपर रहे। अर्थात 2028 से शुरु भइल रहे। 2028 में कुछ देखे लायक ना रहे काहे कि कवनो फैसला आवे में कम से कम दू साल लागत रहे। अइसे भी तलाक के मामला में कानूनन कम से कम एक साल समय दीहल अनिवार्य रहे।

सुबेश के गणितीय दिमाग सारा डाटा दू भाग में देखत रहे। 1990 से 2000 आ 2000 से 2025। काहे कि कवनो ठोस प्रस्ताव खातिर एगो खास डाटा के ही जरूरत होला। यदि डाटा सम्हार में ना आई त प्रस्ताव ना तैयार हो सकी। एकरा के कहल जा सकता— परिणाम निश्चित करके परीक्षा।

तीन

सुबेश लाहिड़ी 1990 से उपर के डाटा पर ध्यान ना देत रहस। लेकिन कोलकाता के परिवार न्यायालय भारत के सबसे पुरान चार गो न्यायालयन में से एक रहे। परिवार अदालत के शुरूआती दिनन के रूपरेखा जाने खातिर पुरान केसन के बारे में जानल उनका जरूरी बुझाईल एही से 1990 से पहिले वाला केसन के विवरण पर थोड़ा ध्यान देवे लगलन सुबेश। एक-एक करके केसन के विवरण कम्प्युटर स्क्रीन पर आवत रहे आ सुबेश नोट पैड पर कुछ लिखत जास। 90, 89, 88, 1987 के आखिर के सवँसे संख्या रहे 113 शुरु भइल 113, 112, 111 ... ... संख्या 76/1987। सुबेश के आंख पहिले त फइल गइल। फिर भिंच गईल जैसे सूक्ष्म चीज देखे के वक्त होला। हालांकि कम्प्युटर के हरफ वोही साईज के रहे जइसन बाकी सब रहे। लेकिन सुबेश खातिर हरफन के आकार जइसे छोट हो गईल होखे उ फिर से पढ़लन—

श्रीमती सुष्मिता सान्याल (वादी पक्ष)

बनाम

डॉ. अजितेश लाहिड़ी (प्रतिपक्ष)

फैसला वाला कालम में लिखल रहे Withdrawn by mutual consent. (परस्पर सहमति से वापस लिहल गईल) आदेश 1989 के सितम्बर महीना में पारित भईल रहे। साल

1989 सुबेश के जिन्दगी में बड़ा ही महत्वपूर्ण रहे। 1989 के अप्रैल महीना में सुबेश पहीला बार यूनीफार्म पहीन के स्कूल गईल रहस। स्कूल के गेट पर खड़ा मां–बाबा के ओर मुड़ के उ देखत रहलन। बाबा चश्मा उतार के रूमाल से आंख पोछत रहस आ मां हाथ हिला के 'टाटा बेटा' बोलत रहस। तभी स्कूल के सहायिका सुबेश के हाथ पकड़ के लगभग खींच के अंदर क्लास में घुसा दिहली।

सुबेश के जन्म एक्स–मस के दिन भइल रहे। सब प्रमाण पत्रन में उहे लिखल बा—

जन्म तिथि	:	25 दिसम्बर, 1984
जन्म स्थान	:	जादवपुर, कोलकाता
पिता	:	अजितेश लाहिड़ी
माता	:	सुष्मिता सान्याल

शुरु के दिनन में सुबेश के बड़ा जिज्ञासा रहे। माँ के पदवी सान्याल बा, लाहिड़ी काहे नइखे। जब पहीला बार इ जिज्ञासा सुबेश अपना बाबा के पास जाहिर कइले त उनकर बाबा शांत स्वर में जवाब दीहलन— माँ से पूछ लीह। एकर जवाब उहे बतईहन।

फिर माँ बतवली हमार सारा सर्टिफिकेट में इहे पदवी बा। ईहां तक कि हमार वकील वाला रजिस्ट्रेशन भी एही पदवी से बा। एकरे कारण हम तोहार बाबा वाला पदवी ना लिखी ले।

शिशु सुबेश खातिर एतना जवाब ही काफी रहे। हालांकि उ जबतक 12 पास ना भइलन उनकर माँ कभी कोर्ट ना गईली। उनका 12 पास भइला के बाद उ कचहरी गईल

शुरु कईली। सुबेश का अभी भी याद बा उनका माँ के पहीला दिन कचहरी जात। सफेद साड़ी का उपर काला कोट पहन के उ गाड़ी में बईठली। बाबा पास में आपन उहे हाफ सर्ट आ पैंट में रहस। सुबेश ड्राइवर का बगल में बईठल रहस लेकिन बार-बार पीछे माँ -बाबा के निहारत रहस। बाबा के एके लाइन सुनाव— Dont take tension yaar (परेशान मत होखऽ यार) बाबा के इ डायलग सुनके सुबेश का हँसी आ गईल रहे। ऊ मूँह घुमा लिहलन। एकराबाद दू साल बहुते कठिन रहे सुबेश खातिर। खाली पढ़ाई आ पढ़ाई। 6 से 7 घंटा सुतल छोड़ के कवनो समय फूर्सत ना रहे। ईहां तक कि बाथ रूम में भी नोट ले के जास। कभी-कभी बाबा बोलस-थोड़ा आराम कर लऽ बेटा। लेकिन माँ डाँट देस बाबा के— 'आपके सलाह के जरूरत नईखे। साल भर के त बात बा। फिर करीहे ना आराम सारा जीवन।'

सुबेश के सामने माँ बाबा दुनों के चेहरा घुमें लागल रहे। बाबा के उ कभी खिसियात ना देखले रहस कामवाली दाई होखे या सब्जीवाला सभकरा से माँ ही निपटस। बाबा के कभी उ कवनों चीज चाहत ना देखले रहस। कपड़ा से लेके खाना पीना तक सब माँ के ही अधिकार क्षेत्र में रहे। त ई मोकद्दमा का उनका माँ बाबा के बीच में भईल रहे? सुबेश के आँख बंद हो गईल। आदमी के मनोदशा आंखन से ही जाहिर होला। इंटरकाम पर सहायक के बोललन - Ask for case file No. 76/1987 of Alipore Family Court, Kolkata. (अलीपुर, कोलकाता के केस फाईल नं. 76/1987 मंगवाव।)

चार

रायपुर
छत्तीसगढ़ के राजधानी
प्रोफेसर कॉलनी के कोना वाला मकान
गेट के पास देवाल में नाम फलक पर लिखलबा—
डॉ. अजितेश लाहिड़ी
श्रीमती सुष्मिता सान्याल

गेट से अंदर ढुकते बरामदा रहे। बरामदा में दू गो दरवाजा खुलत रहे। एगो सदर दरवाजा। दोसर दरवाजा पर तांबा के प्लेट पर लिखल रहे—

सुष्मिता सान्याल, अधिवक्ता

कमरा ठीक वकील के कमरा जईसन ही रहे। चारो ओर फर्श से दीवाल तक रेकन में मोटा-मोटा किताब भरल रहे। कवनों वकील के क्षमता अईसन किताबे के आलमारी से ही पता चलेला। मालूम ना उ सब किताब वकील लोग कबो खोलबों करे ला कि ना।

बीचों-बीच एगो बड़हन टेबुल रहे। टेबुल पर बायां तरफ खुलल लैप-टॉप कम्प्युटर रहे। वकील के कुर्सी लकड़ी के बनल रहे। लेकिन देखिए के बुझाव कि महंग बा। टेबुल का सामने चार गो कुर्सी रहे। बीच में आवे जाये के जगह छोड़ के आउर चार गो कुर्सी राखल रहे। एक कोना में सहायक के कुर्सी टेबुल रहे। कमरा में कवनों कैलेंडर ना टांगल रहे। मात्र टेबुल पर एगो टेबुल कैलेन्डर रहे। कमरा

में केवल एगो चीज बड़ा ही अनकस दीखत रहे। एतना अलग किस्म के सजल कमरा में ऊ फोटो फ्रेम वाकई बड़ा भद्दा दीखत रहे।— देखला पर कम से कम ऊ फोटो के उम्र पचास से कम ना लागत रहे। ओमे एगो मर्द औरत के साथ एगो बच्चा के फोटो रहे। लागत रहे स्टूडियों में खीचल फोटो रहे। तीनों के मुँह पर एगो अईसन हँसी लऊकत रहे जवन फोटो खींचे के समय पचास साल पहीले जरूरी रहे। हरेक फोटोग्राफर बटन दबावे का पहिले जरूर कहस— Smile Please। जाने वाला लोग के मालूम रहे ई फोटो वकील साहिबा, उनकर पति प्रोफेसर साहेब आ बेटा के बा। सुष्मिता के आजो विचित्र लागेला कि रायपुर में अजितेश के केहू नाम से ना बोलावे। जब भी उनकर बात आवेला लोग प्रोफेसर साहब के नाम से ही पुकारेला। ई बात अलग रहे कि प्रोफेसर होखे का आस में अजितेश मृत्यु के दू साल पहिले 'रीडर' पद पवले रहस। प्रोफेसर 1989 के फरवरी महीना में लेक्चरर हो के रायपुर आईल रहस।

सुष्मिता के आज भी याद बा। 14 फरवरी, 1989 मंगलवार के तीनों प्राणी सुबह 8 बजे मुंबई मेल से रायपुर स्टेशन पर उतरल। तब ना छत्तीसगढ़ राज्य बनल रहे ना रायपुर राजधानी रहे। कवनों जिला मुख्यालय जईसन हालत रहे रायपुर के । स्टेशन से निकल के जब ऊ सब बाहर आईल त कॉलेज के चपरासी खड़ा रहे। पीछे जनवरी में जब अजितेश ज्वाईन करे आईल रहस तबे प्रिंसिपल उ बंगाली चपरासी से परिचय करा

दीहले। अपना आवे के तारीख बता के प्रिंसिपल के ऊ फोन करे समय खास करके निमाई चक्रवर्ती के भेंजे खातिर अनुरोध कईले रहस।

निमाई अजितेश आ सुष्मिता के पैर छुअलस। स्टेशन से सीधा दूगो रिक्सा करके ऊ सब कॉलेज के साथ क्वार्टर में पहुंचल। हलांकि निमाई अपना तरफ से बड़ी साफ-सफाई कईले रहे लेकिन घर के अवस्था सुष्मिता के पसंद आवे के कवनों सवाले ना रहे। फिर भी रायपुर आईल जईसन समझौता के सामने गंदा घर से समझौता के कवनों माने ना रहे।

जईसन कि पहिलही बतावल बा 1989-90 में रायपुर छोट शहर रहे। लेकिन भीतरे-भीतर बड़ा शहर में तब्दील होखे के सुगबुगाहट साफ-साफ समझ में आवे। शुक्ला परिवार के बड़ा ही सशक्त पकड़ रहे सब चीजन पर। कलकत्ता आ बंबई के बीच में भईला से कारोबारी भी भारी संख्या में आईल शुरू क दीहले रहलन। जमीन जायदाद के भी माँग बढ़ल जात रहे। पुराना शहर के बाहर 10 एकड़ के एगो प्लाट प्रोफेसर कॉलनी कोपरेटिव के नाम से सरकार दीहले रहे। बड़ी मुश्किल से 30 गो कॉलेज शिक्षक लोग मिलके उ प्लाट के घर बनावे लायक तइयार कईल लोग।

अजितेश स्वभाव से सुस्त किस्म के आदमी रहस। बोलस धीरे-धीरे, खास धीरे-धीरे, चलस धीरे-धीरे। सुष्मिता उनका ठीक विपरीत रहली। सब जल्दी-जल्दी। उ दूनो के एक साथ देख के सभे फुसफुसाव ''ना जाने कइसे निभे ला दूनो

प्राणी में। लेकिन जाने वाला जानत रहे कि दूनो के स्वाभाविक भिन्नता ही एक दूसरा के पूरक के काम करे। अच्छा-बुरा सब समय में एक जाना के कमजोरी दूसरा के कारण बनल रहे।''

प्लाट लेहला से लेके ओपर घर के डीजाईन वगैरह सब कुछ सुष्मिता के देख-रेख में ही बनल। लेकिन एही सब के बीच में सुबेश आठ पास करके नव में पहुँच गइले। तभी तऽ सब काम से बड़ा काम आ भईल सुबेश के पढ़ाई। सुष्मिता के सबसे बड़ा कमजोरी रहे कवनों उद्देश्य खातिर पागलपन के हद तक पहुँच गईल। सुबेश का बड़ा बुरा लागे। उ एने ओने देखके बाबा का पास जा के बईठस। बाबा के उनके सर पर हाथ फिरावल बड़ा ही अच्छा लागे। माँ के प्यार उनका डांट से ज्यादा रहे। हजार मन ना रहला पर भी कम्प्लान पीयल एकदम जरूरी रहे सुबेश खातीर आ उहो ठीक 9 बजे - पांच मिनट पहिले ना बाद में। कभी भी अईसन ना भईल कि सुबेश जाग के पढ़ाई करस होखस आ सुष्मिता सुतल रहस। 10 के परीक्षा के परिणाम आईल आशा के मुताबिक पूरा राज्य के (Topper) में सुबेश के नाम रहे। लेकिन सुष्मिता खातिर ई रिजल्ट के कवनों माने ना रहे। रिजल्ट त 12 के चाहीं। लेकिन सुष्मिता आखिरकार हार गईलीं बाप-बेटा से। उनका हजार कोशिश के बाद भी सुबेश के मन जीव विज्ञान की ओर ना झुकल। बाप जईसन हिसाब आ क्षेत्रमिति के सवाल त जइसे बाप-बेटा में कम्पीटिशन रहे। कागज कलम के जरूरते ना पड़े। सेट थ्यौरी पर त अजितेश लाहिड़ी के

लिखल किताब पूरा राज्य में पाठ्य पुस्तक जईसन चले। आखिर उहे 12 आ आई.आई.टी. दूनों एके साथ सुबेश पास कईलन। आई आई टी रैंक भी अच्छा रहे। फिर उहे समस्या। सुष्मिता चहली कम्प्युटर लेकिन सुबेश लीहलन मेकनिकल। बंबई आई आई टी में उनकर भर्ती भईला के साथ-साथ सुष्मिता फिर से अकेला हो गईली। अंधकार से बाहर आवे खातिर उ आपन पुराना सर्टिफिकेट निकलली आ वकालत करे के तैयारी शुरू हो गईल। अजितेश सुष्मिता के रोआं-रोआं चिन्हस। इ औरत जवन काम एक बार ठान लिही उ कके रही। चाहे जे हो जाव।

पाँच

अजितेश के खूब मन ना रहे रायपुर जाये के। हाँलांकि उहो सरकारी कॉलेज में लेक्चरर के आफर उनका कलकत्ता वाला प्राइवेट कॉलेज से लाखों गुणा अच्छा रहे। लेकिन सुष्मिता के निर्णय के आगे उनकर कुछ ना चलल।

सुष्मिता शुरू में कलकत्ता छोड़े के कल्पना भी ना कइले रहस। लेकिन पिछला तीन साल में कलकत्ता के हर गली उनके काटे दौड़त रहे प्रत्येक लोग जईसे उनके ओर ताकत रहे। जिन्दगी ईतना भयानक हो सकेला-सुष्मिता के रोम-रोम ई महसूस करे लागल रहे। सुष्मिता के घर से निकले के मन ना करे। सुबेश के घर के पास ही एगो नर्सरी स्कूल में दाखिला करवले रहे सब। सुबह 10 से 2.00 बजे तक स्कूल रहे। एही समय में घर के सारा काम निपटावे के पड़े उनके। अजितेश सारा दिन बाहर ही बितावस। कभी-कभी दुपहर में आ जास। सुष्मिता के कभी भी दिन में सूते के आदत ना रहे। लेकिन रात में 9 से 10 के बीच उनका खातिर जागल असंभव रहे। दोसरा तरफ अजितेश 11-12 बजे के पहीले बिछावन पर ना जास। ओने 8 बजे के आगे जाग भी ना पावस।

जब सुष्मिता रायपुर जाये खातिर ईरादा पक्का कर लीहलीं तऽ अजितेश पहीला आ आखिरी बार शर्त रखलन। कहलन ''ना हम कहीं ना जाईब कलकत्ता छोड़ के।

का रखल बा ईहाँ कि ना जाईब।

हमरा नइखे पता लेकिन हम ना जाईब। अजितेश के आँख में अइसन चमक पहीला बार देखले रहस सुष्मिता। शायद अजितेश के अईसने के इंतजार रहे सुष्मिता के अन्तर्मन में। पल भर खातिर उनकर आवाज बंद हो गईल। जवना अजितेश से अतना दिन उनकर परिचय रहे, आज ऊ अजितेश ना लगलन। अजितेश से दुबारा नजर मिलावे के साहस ना भईल सुष्मिता के।

फिर तऽ उहे नारी के आखिरी अस्त्र के इस्तेमाल कर दीहली ऊ। भगवान औरत के हाथ में ई बड़ा ही अमोघ अस्त्र दीहले बाड़न। सुष्मिता का आँख से आँसू के धार बहे लागल। लेकिन ई का। आज अजितेश के हाथ सुष्मिता की ओर ना बढ़ल। मिनट भर का बाद तूफान शांत भईल। आँसू पोछत सुष्मिता कहे लगलीं— देखीं , अब हमरा से अउर नइखे सहात। अब हमरा में लड़े के ताकत नईखे बाचल। कलकत्ता में सांस लीहल हमरा मुश्किल हो गईल बा। पिछला दू साल से हमार अवस्था का बा रउरा त जाने के भी जरूरत नईखी समझत। आज हम पक्का कह तानी। यदि एहबार आप रायपुर ना जाये के तइयार होखब त हमरा खातिर एकेगो रास्ता बाँचल बा—

अजितेश का मन में एक बार त डर समा गईल। ई लड़की कुछ भी कर सकेले। उ ठीक कर लीहले—चल शायद भाग्य में इहे बदल बा। कहलन—“ठीक बा। लेकिन हमार एगो शर्त बा। पहीले उ मामला उठावे के पड़ी।”

हम त कब से तईयार बानी। शाम के ही दूनो जाना वकील के पास पहुंचलन आ मसौदा बन गईल—दूसरा दिन दूनो जाना के तरफ से कोर्ट में दरखास्त पेश होगईल। कोर्ट एगो लम्बा तारीख दीहलस विचार खातिर। कवनों बात ना। रायपुर बसेरा बांधे के तइयारी शुरू हो गईल।

छः

शास्त्री भवन

कमरा संख्या 311 ए

नई दिल्ली

दरवाजा पर पीतल के प्लेट पर बस 311 ए खुदल रहे। ठीक 9.30 बजे सुबेश पहुंचलन। सफेद यूनीफार्म पहनल चपरासी दरवाजा खोल के खड़ा रहे। कुर्सी पर बइठे के पहले सुबेश हाथ जोड़ के प्रणाम के मुद्रा में कएक सेकेण्ड खड़ा भइलन। ई संस्कार उनका में कइसे आइल उनको पता ना रहल।

ठीक 9.35 में पी ए एगो मोटा लिफाफा लेके घुसलन। हाथ बढ़ाके लिफाफा सुबेश लेहलन आ पीए के चल गईला के बाद सुबेश कैंची से लिफाफा के मुंह कटलन। उनका चेहरा पर कुछ विचित्र भाव आवत जात रहे। लागत रहे जइसे तेज गति से बिचारन के ज्वार-भाटा उनका अंदर आवत जात बा।

लिफाफा का अंदर एगो चिट्ठी रहे—

प्रेषक
रजिस्ट्रार, परिवार न्यायालय
अलीपुर, कोलकाता

सेवार्थ
ज्वाइंट सेक्रेट्री
भारत सरकार

संदर्भ : केस सं. 76/1987

महोदय,

आदेशानुसार उपर्युक्त केस फाईल संलग्न बा।

भवदीया,
कृते रजिस्टार

साथ में एगो सील कईल लिफाफा रहे। सुबेश के हाथ तेजी से चले लागल। लिफाफा खोल के अंदर से कागज के मोटा पुलिंदा निकलल। कागज के हालत बुरा रहे।

हे भगवान। कईसन जमाना रहे। सुबेश का मुंह से अपने आप निकल गईल। पूरा केस रेकर्ड रहे। सुबेश इन्टरकाम उठा के बोलले—नो फोन, नो विजिटर। यानी कवनों फोन लाइन या मिलेवाला के अंदर आवे ना दीहल जाव।

धीरे–धीरे फाईल पढ़े लगलन सुबेश। पहीलका पन्ना पर लिखल रहे श्रीमती सुस्मिता सान्याल पत्नि डॉ. अजितेश लाहिड़ी ई मुकदमा अपना पति डा. अजितेश लाहिड़ी के खिलाफ दर्ज कईले बाड़ी। अर्जी सामने राखल बा। ई अर्जी

के मूल बात बा कि दूनो जाना के शादी हिन्दू परम्परागत विधि से 26 दिसम्बर 1983 में भइल बा। पिछला दू साल से उनकर पति के व्यवहार उनका प्रति ठीक नइखे। पति के उदासी, जरूरत से ज्यादा सहनशीलता, सब बात में राजी हो गइल जईसन हालत उनका सहल नइखे जात। अतः अदालत से प्रार्थना कईल जाता कि ओ लोग के शादी भंग करे के आज्ञा दीहल जाव। दोसर पारागाफ में लागता जज साहब खुद लिखले रहस—विपक्ष के नोटीस जारी कईल जाव। सुनवाई एक महीना बाद।

हस्ताक्षर

5-12-87

विपक्ष के नोटिस मिलला के रसीद सामने बा श्रीमती सान्याल वकीलन के साथ कोर्ट में हाजिर बाड़ी। विपक्ष के तरफ से कवनो अर्जी नइखे। फिर भी विपक्ष के आउर एक महीना समय दीहल जाव।

हस्ताक्षर

10-2-88

पक्ष के वकील हाजिर। विपक्ष के तरफ से कोई नइखे। पक्ष के वकील सुनवाई शुरू करे खातिर दबाव दीहलन। विपक्ष के ताजा नोटीस भेजल जाव।

अगीला सुनाई 16/3/1988

हस्ताक्षर

16/3/1988

विपक्ष गैरहाजिर। पक्ष के वकील के जोरदार अपील सुनला के बाद अदालत के संदेह होता कि विपक्ष जान बूझ के गैरहाजिर हो तारन। ई पता चलता कि उ कालेज में अध्यापक बाड़न। उनकर सामाजिक प्रतिष्ठा के ध्यान में रख के अदालत एगो आखिरी चांस देता। लोकल थाना के द्वारा नोटिस भेजल जाव।

अगीला सुनवाई 6/4/88

हस्ताक्षर

6/4/1988

पक्ष के तरफ से गैरहाजिरी के दरखास्त पेश। विपक्ष—अजितेश लाहिड़ी उपस्थित। उनका तरफ से कवनो वकील नईखन। मुकद्दमा के कागज मिलल बा स्वीकार कईलन। उनकर कहनाम बा कि परिवार अदालत के कार्रवाई बंद कमरा (In camera) होखे के चाहीं तभी उ कवनों जबाब दीहन। उ कवनों वकील नइखन रखे के चाहत।

चूंकि पक्ष गैरहाजिर बा सुनवाई के अगला तारीख आज से दो महीना बाद दीहल जाय।

हस्ताक्षर

एही तरे हरेक सुनवाई के तारीख पर कुछ ना कुछ लिखल रहे। सुबेश तेजी से आर्डर सीट बदलत गइले।

19/12/88

दूनो पक्ष की ओर से आवेदन पेश। बतावल बा कि दूनों पक्ष में समझौता हो गइल बा आ केस उठावे खातिर अर्जी करता।

चूंकि अइसन मामला में दूनों पक्ष के सोचे के मौका मिले के चाहीं कोर्ट 6 महीना के समय देता।

अगला सुनवाई 18/06/89 के मुकर्रर।

18/6/1989

दूनों पक्ष अनुपस्थित। आदेश खातिर 26/9/1989 मुकर्रर। यदि कवनों पक्ष के आपन विचार बदले के होखे त 1 महीना के अंदर आवेदन कर सकता।

26/9/1989

निर्णयपारित। केस फाईल बंद।

सुबेश का चेहरा पर स्पष्ट तनाव दीखत रहे। कवनों शक ना रहे कि मुकद्दमा उनका बाबा-माँ के बीच भईल रहे। अपना बचपन के याद करे के कोशिश कईलन सुबेश। रायपुर आवे का पहिले के सब बात घुंआ-घुंआ जइसन लागे। मां-बाबा के संपर्क के बारे में कुछ याद लायक कभी ना रहे।

बाबा हमेशा ठंढा किस्म के आदमी रहस। चौड़ा गोरा चेहरा पर हमेशा निश्छल मुस्कुराहट। मरल अवस्था में उहे मुस्कुराहट रहे उनका चेहरा पर। बाबा के लाश के पास खड़ा होके सुबेश उनका चेहरा पर उहे मुस्कुराहट देखले रहस। तब दूर्ग में डी.एम. रहस सुबेश। खबर आईल—

बाबा के अटैक आईल बा। करीब 2 घंटा में उ पहुंच गइलन रायपुर। बाबा नर्सिंग होम के आई.सी.यू. में रहस। सुबेश के डाक्टर अंदर ले गईलन। माँ उनके माथा पर हाथ फिरावत रहलीं। बाबा कुछ बोले के कोशिश कइले। डाक्टर मुंह से वेन्टीलेटर हटवले। बाबा के मुंह के पास सुबेश कान ले गइले। सुनपवले मां के ख्याल रखीह बेटा ...। सुबेश आउर कुछ ना सुन पवले। डाक्टर संगे-संगे मुह पर आक्सीजन वाला वेन्टीलेटर फिट क दीहले—आ कहले— अपने सभन थोड़ा बाहर जाईं। सुबेश बाहर आ गइले। लेकिन मां ना अइलीं। उ टूल पर बैठके सीधा बाबा के निहारत रहस। बाबा के दाहिना हाथ अपना दूनो हाथ से पकड़ले रहस। लागत रहे खूब जोर देवे के पड़त बा उनकर हाथ पकड़े में।

ओकरा बाद सब कुछ जइसे अपने आप हो गइल। बाबा के लाश के साथ श्मशान तक मां गइलीं। कवनों रोवल-पीटल ना। श्राद्ध - शांति का बाद जब सुबेश कहले - मां, अब त बाबा ना रहलन तू हमरा साथ चल। मां मुस्कुरा पड़ली। अईसन मुस्कुराहट सुबेश उनका मुँह पर कभी ना देखले रहस। कहलीं - तू जान तार नू औरत पति के घर से एके बार जाला।

फिर सुबेश के उदासी दूर करे खातिर शायद कह भईली देख। इहां इ घर, इ शहर के साथ हमनी के बहुत कुछ जुटल बा। आ तू ठहरल सरकारी मुलाजिम। उहो इतना बड़ा पोस्ट पर। तू केतना देर रहब हमरा साथ। आ अभी त हम सक्षम बानी। केस वेस भी त कुछ बड़ले बा। एही

में दिन कट जाई। बाकिर रोज त तहरा साथ बात होइबे करेला चाहे तू कहीं रह।

हां सुबेश नियम से टेलीकांफ्रेंस पर मां के साथ बात करस। मां उनका खातिर हमेशा नदी के स्रोत जइसन रहस। स्वच्छ, निर्मल लेकिन उर्जा से भरपूर। जइसे सुबेश के जीवन–प्राण।

आ बाबा– जइसे जेठ का दुपहरी में बरगद के पेड़। ओकरा नीचे बईष्ला पर सब थकावट, सब गरमी अपने आप दूर हो जाला। सुबेश का याद आईल।

एक बार आई आई टी से पिकनीक पर उ सब बूंदी गइल रहस। सितम्बर रहे। धूप में गरमी इतना रहे कि सुबेश पेड़ का नीचे बइठलन। थोड़ा समय में ही मन हल्का हो गईल। उपर नजर फिरल का पेड़ रहे जइसे एगो बड़ा छाता– गोलाकार गोल–गोल पत्ता। जेने उनके नजर जाव ओह तरफ के पत्ता जइसे हिले लागे अपने आप। पूछे के पड़ल रहे– कवना चीज के पेड़ ह? बरगद। करीब घंटा भर उहाँ बईठल रहस सुबेश। साथी सब भी वहीं बइठ के खाईल लोग। पास ही एगो सोता रहल। बतावल सब इहे नदी आगे जा के बड़ा हो जाला। पहाड़ी नदी। छोट–बड़ पत्थर के बीच से छल–छल बहत जात रहे। जहां तनी बड़ पत्थर के पास गुजरे उहां पानी के बुलबुला तईयार हो जात रहे। आहा! रे। नदी के सौन्दर्य ई पत्थरन से कई गुना बढ़ जात रहे।

आज जब बाबा के मरला के बाद मां के अकेला छोड़ के सुबेश लवटत रहस त न जाने कइसे उ गाछ आ नदी वाला दृश्य बार–बार उनका याद आवत रहे।

सात

हठात अलार्म के आवाज से सुबेश के ध्यान कम्प्युटर स्क्रीन पर चल गइल। स्क्रीन पर 12–30 बजे के प्रोग्राम (Engagement) दीखावत रहे। जल्दी से फाईल बंद कईलन। लिफाफा के ड्रावर में रखके चाभी लगवले। ड्रावर के चाभी अपना आदत के खिलाफ पाकेट में रख के मंत्री जी के कमरा की ओर प्रस्थान कईले।

मंत्री जी के कमरा पहीला मंजील में रहे। उहां पहुंचे में ठीक 45 सेकेण्ड लागल सुबेश का। 12–30 में मंत्री जी के सामने रहस।

हां सुबेश जी बतावल जाव प्रोजेक्ट के बारे में।

"सब कुछ समय से हो रहल बा। आशा करतानी सदन के अगला सत्र में नया मसौदा पेश क दीहल जाई।"

ओकरा पहिले हम चाहतानी कि इ विषय पर Public Debate (खुला बहस) होखे। आप अईसन करीं कि अपना प्रोजेक्ट रिपोर्ट के कापी हमरा पास एह सप्ताह का अंत तक दे दीं। फिर हम कुछेक शहरन में एह विषय पर आलोचना शुरू करा दी। एह बीच नया तलाक कानून के मसौदा आप तैयार कर लीं जईसन हमनी के प्लान बा।

"हां सर।"

गजब तौर तरीका होला सरकारी तंत्र के। चाहे अफसर जितना बड़ा काहे ना होखे अपना बॉस के सामने हां सर, जी सर छोड़ के कुछ ना बोलस । फिर भी नीचे वाला

के विचार विवेचना से ही सरकार चलेला। उपर वाला खाली एगो आइडिया दे देले। नीचे वाला सारा कुछ तैयार करीहें। लेकिन आलोचना के समय पर उपर वाला के हर प्रश्न के जावाब खाली हां सर होखे के चाहीं। बाहर से लागेला कि अरे ई त बड़का मखनबाज बा हमेशा हां सर, हां सर, कहत रहेला। लेकिन ई हाँ सर, के पीछे उ अधिकारी के दिमाग पूरा तरह बॉस के बात सोचत रहेला। सरकारी तंत्र के सफलता एही पर निर्भर बा कि हर उपर वाला के विचार के मंथन नीचे वाला के दिमागी कम्प्युटर कितना सठीक कर रहल बा।

सुबेश अपना कमरा में अइलन। कम्प्युटर के डिक्टेशन देबे लगलन। कम्प्युटर सुबेश के डिक्टेशन 85-90 प्रतिशत तक सही सही समझ के टाइप करत जाव। बाकी उ खुद ठीक करत जास। करीब 45 मिनट बाद एगो दू पेज के प्रिन्ट आउट निकललन। विषय (Topic) के बारे में बहुत सोच विचार के लिखलन—"एकीसवीं सदी में परिवार और तलाक।"

सारा दिन के व्यस्तता के कारण सुबेश भूल गईले कि कवनों फाईल के संपर्क उनका खून से जुड़ल बा। शाम में 4 बजे उनका ओह दिन के काम के (Reconcillation) लेखा जोखा के समय रहे। उनकर हाथ अपने-आप पाकेट में पहुंच गईल। चाभी से ड्रावर खोल के उ फाईल निकललन। अबकि बार उ फाईल ना खोल के साथ वाला छोटा लिफाफा खोललन। लाला स्याही से लिफाफा पर लिखल रहे (Exibit 1/1) । ओह लिफाफा के अंदर 1987

साल छपल एगो डायरी निकलल। डायरी के अंदर में कागज के रंग पियरा गईल रहे। बड़ा-बड़ा अक्षर देखिए के एके बार में उनका बुझा गईल माँ के डायरी ह। उनका चेहरा पर भाव बदल गईल। शुरू के तीन चार पन्ना खाली रहे। फिर लिखल शुरू भईल। बीच-बीच में एक-दू पन्ना छोड़ के लिखल मिलल।

25-12-1986

हमरा दिन भी याद बा। ओह दिन गुरुवार रहे। गोलू के दूसरा जन्मदिन मनावे खातिर हमरा घर में मां पिताजी आ बहीन भी अपना दूगो बच्चन का साथ आईल रहलीं। ये तरह के आयोजन हमरा घर में पहीला बार रहे। पड़ोस के तीनों परिवार के बच्चन शाम से ही कचमच कइले रहस। 6 बजे केक काटे के रहे। बगल के तीनों घर के औरत भी आ गईलीं। सब लोग कहे लागल अब त केक काटल जाव। बस हो गईल झमेला- छुरी नईखे। हमरा त जइसे पसीना आ गईल। तभी सीमा कहली- हम अपना घर से ले आवतानी। उनका गईला अभी 1 मिनट भी ना भईल कि हमरा बुझाईल देरी होता। सब लोग खड़ा बा केक के सामने। हम अपना शादी वाला लहंगा पहीनले रही। उ इतना भारी रहे कि एक हाथ से उठा के चले के पड़े। हम सीमा के घरे चल पड़नी। गेट भीड़ावल रहे। दरवाजा ठेलत भईल कि हठात हमरा जइसे बिजली के झटका जईसन लागल। दरवाजा खुलला के साथ हमार शरीर उनका संग टकरा गईल। हम गिरे के डर से उनकरे शरीर पकड़ लेले रहनी। संगे-संगे हट के खड़ा भइनी सन। दूनो आदमी के

नजर कुछ देर तक एक दूसरा में अटक गईल। हमही सीमा के आवाज दीहनी। भीतर से सीमा हाथ में एगो छुरी लिहले निकलली। अरे दीदी रउरो आ गईनी। चली। हम मुड़े के पहीले रजत की ओर देख के कहनी ....

रउरा काहे नईखी चलत। आई ना सब लोग बा।

काहे सब लोग ना रही, त हमरा के ना बुलायेब भाभी।

रजत का आंख में एगो विचित्र तरह के शयतानी रहे। कुछ सोचे बोले के समय ना रहे। हम सीमा के साथ अपना घर में घुसनी। केक कटाईल। लड़ीका गवलनसन हैपी बर्थ डे टू यू। बैलून फूटे के आवाज होखे लागल लेकिन हमार आंख त जईसे कुछ दोसरे दूढ़त रहे। देखनी पीछे खड़ा बाड़न रजत। हम लड़ीका के मां के रूप में केक के टूकड़ा सबका मुंह में देत रहनी। थोड़ा हिचक के उनका मुँह में डाले गइनी त एगो फुसफसाहट सुनाईल-- गजब सुन्दर बानी आप। हम केक के टुकड़ा उनका मुंह में डाल के मुस्कुरा पड़नी।

31 दिसम्बर, 1986
रात्रि 8.30 बजे

सीमा आ रजत एके साथ आईल लोग हमरा इहां। अजितेश भी रहलन। बातचीत जइसे पड़ोसी से होला-होत रहे। लेकिन, हमरा मन में जइसे चोर रहे। हमरा रजत से आँख मिलावे में असुविधा होत रहे। हम उनके ओर निहारे के पहिले सीमा आ अजितेश की ओर

देखत रहनी। एकबार रजत से आंख टकराईल त उनके आंख में एगो गजब किसिम के शरारती निमंत्रण महसूस भईल। पूरा शरीर में विचित्र किसिम के सिहरन दउरे लागल। हम संगे-संगे चाय ले आवतानी बोल के रसोई में घुस गइनी। इ ठीक भईल कि नया साल हमनी के डायमंड हारबर में मनावल जाई।

1 जनवरी, 1987
गुरुवार
डायमंड हारबर

जहां के नाम सुन के लागेला कि समुद्र के बन्दरगाह जइसन जगह होई। बड़ा-बड़ा जहाज देखे कि मिली। लेकिन अईसन कुछ ना रहे। मछली पकड़े वाला छोट-छोट नाव छोड़ के कुछ ना रहे। पूछला पर पता चलल कि इहां से समुद्र काफी दूर बा। नदी के किनारे जाये के कवनों उपाय ना रहे। चारों ओर कीचड़ ही कीचड़। उपर से मछली के गंध । हमरा त मुंह से निकल गईल—रजत जी, इहे दीखावे खातिर ले अइनी ह सभे। अजितेश बात कटलन रजत भाई चल ना एगो बढ़िया होटल बा इहां—सागरिका। ओही जा खाइल पीअल जाव।

फिर हमनी का सागरिका होटल पहुंचनी। बढ़िया बनल रहे होटल। अभी नये रहे। साफ सुथरा भी रहे। नीचे एगो बच्चन के पार्क रहे। हमरा पार्क देख के बड़ा आनंद होला —अभी भी । हम सीमा आ बच्चन के लेके पार्क में चल गइनी। सामने झूला रहे। हम लोभ

न संभार पवनी। करीब आधा घंटा बाद रजत आ गइलन। का होता सीमा? चल उहां खाना टेबुल पर लाग गइल बा। जल्दी आव। सीमा साड़ी संभालत बुदबुदात झूला से उतरके चल पड़ली। बच्चा त दउड़ के उनका पीछे लाग गइले सभन। सीमा आ बच्चन के आगे करके रजत हमरा साथ हो गईलन।

"का भाभी कइसन लागता?"

"नइखे मालुम।"

"अब त मुँह खोलीं । हमरा मालुम बा कि आपके मन में का बा? "

"जब मालूम ही बा त पूछत काहे बानी?"

"भाभी हमरा आपके बिना रहल नइखे जात।"

"मालूम बा त कि हम शादीशुदा बानी आ बच्चा भी बा।"

"से त हमरो बा। लेकिन आपके देखला के बाद सब कुछ भूला गईल बा।"

"सामने होटल के सीढ़ी रहे। हमरा बुझाइल रजत के शायद ध्यान नइखे ओह ओर।"

"सामने देखी ना त ठेस लाग जाई।"

"आप संभाले खातिर बानी ना।"

"बात त खुब बनावतानी। कुछ गुणों बा कि अइसहीं।"

"चांस त दीं। फिर देखब का बा, का नईखे।"

आगे बात रूक गईल। हमनी का सामने बड़ा सा टेबुल पर अजितेश दीखले। टेबुल पर खाना लागल रहे उनका चेहरा पर चिर परिचित शांति दीखत रहे।

2 फरवरी, 1987
सोमवार

अजितेश करीब 11 बजे कॉलेज गइले। गोलू के जबर्दस्ती खिला के सुता के नहाये के तइयार होत रहनी। तभी फोन के घंटी बाजल। फोन उठवनी। ओने से आवाज आईल। ‘‘हलो भाभी। रजत बोलतानी।

‘‘बोलीं’’

‘‘कवनो जबाव ना आईल। फिर कहनी—’’

‘‘का भईल? चुप काहे हो गइनी।’’

‘‘आप बुरा त ना मानब नूं।’’

‘‘काहे बुरा लागेवाला बात करे के बा का ?’’

‘‘अरे, अरे। अईसन मत सोंची। हमरा कहे के मतलब रहल......’’

‘‘मतलब त अच्छा नइखे बुझात। खैर जब मन में आईल बा त कहिए दीं।’’

‘‘भाभी, आप बड़ी सुन्दर बानी। आ जतना बाहर से बानी अन्दर में कहीं ओहू से ज्यादा।’’

‘‘आह ..। हम जान बूझ के थोड़ा नखरा कर के कहनी।’’

‘‘भाभी हम रात में सुत नइखी पावत।’’

‘‘सीमा नईखीं का?’’

‘‘उनकर त नाम मत लीं। न जाने कवना नक्षत्र में हमनी के शादी भइल रहे।’’

‘‘अच्छा खासा त सुन्दर बा बेचारी।’’

‘‘बेचारी उ नइखी। उ हमरा के बेचारा बना के रखले

बाड़ी। काल डायमंड हारबर से लवटला पर माथा दरद ले के सुत गइली।'' हमरा हंसी आ गईल। हंसते-हंसते कहनी— ''तभी बाबू का भाभी इयाद आ गइली ह।''

''भाभी खाली मजाक मत करीं। हमार जान निकल रहल बा।''

''सौरी डियर, वेरी सॉरी। हम मूड में आ गईल रहनी।''

''भाभी। प्लीज अईसन मत कहीं। हमरा दुख पहुंचता।''

''अभी कईसन बाड़ी सीमा।''

''उनकर बात मत उठाई भाभी हमार जिन्दगी नरक बना के रखले बा उ औरत।''

''अच्छा त बताई का कहे के चाहतानी।''

''भाभी नइखे बुझात कईसे कहीं। आप कहीं बुरा न मान लीं।''

''फिर उहे बात। अरे जब भाभी पर विश्वास बा त बोलीं।''

''विश्वास त अतना बा जतना अपनों पर नईखे लेकिन कुछ बाते अईसन बा कि कहे में संकोच होता।''

''हम अब फोन रख दे तानी।''

''ना भाभी , इ मत करी। हमरा के कम से कम दिन में एक बार बात करे के अनुमति दीहल जाव।''

''मंजूर। अब रखीं।''

''भाभी। आय लव यू भाभी।''

''आई टू ....''

ना जाने हमरा मुंह से कईसे निकल गईल।

एक बार टेलीफोन के सिलसिला शुरू का भईल जइसे नशा चढ़ गईल। जब दिन के साढ़े ग्यारह बजे हमार ध्यान टेलीफोन पर चल जाव। पहीले त एने ओने के बात होखे

फिर सीमा के लेके रजत के चालीसा। सीमा के नाम सुनते सुनते रजत जईसे खउले लागस। हमरा बड़ा मजा आवे। हम ई सोचे लगनी कि शायद रजत से संबंध बढ़ा के हम उनका जिन्दगी में थोड़ा ऑक्सीजन दे तानी। हो सकता कहीं ना कहीं हमरा मन में अईसन भावना रहे कि सीमा के हाथ से हम रजत के छीनतानी।

8 फरवरी, 1987
रविवार

रोज के तरह काल्ह भी ठीक 11.30 बजे रजत के फोन आईल। करीब आधा घंटा तक बात होत रहल। बात के कवनो विषय त रहेना लेकिन खतम होखे के नाम ना लेव। अंत में हमीं बतवनी कि रविवार के फोन मत करब। अजितेश घर में रहीहन।

रजत कह भईलन– "भाभी आप एक बार आधा घंटा खातिर बाहर ना आ सकऽतानी।"

हम कहनी – "कइसे निकलब बताई। घर में ऊ रहीहन। फिर गोलू भी बा।"

"गोलू के भईया का पास रखके आधा घंटा खातिर निकल आईं ना, भाभी।"

"हम कोशिश करब। लेकिन आशा नईखे बुझात।"

"हम ठीक चार बजे गोल पार्क बस स्टॉप पर इन्तजार करब।" ईतना कह के रजत फोन काट दीहलन।

तब से आज तक हमरा मन में उथल-पुथल चलत रहे। अईसे तऽ शादी के बाद घर से निकले में कवनों रुकावट

ना रहे। लेकिन आज निकले के उद्देश्य दोसर रहे। एह से हमरा मन में बड़ा ही बेचैनी महसूस होत रहे। कईसे कहीं, ठीक ना कर पावत रहनी। आखिर में खाये का समय अजितेश से बोलनी-

"आज शाम में कहीं जाये के बा आपके?" ना तऽ। "काहे कुछ बात बा का?" अजितेश उल्टे सवाल कईलन।

"ना अईसन कुछ नईखे। दू एगो सामान ले आवे के रहल ह। यदि गोलू के थोड़ा देर रखती अपना पास तऽ गड़ियाहाट जइती हम।"

"ठीक बा, चल जईह।" हम तैयारी में लाग गईनी। साड़ी ही पहिन के गईल ठीक होई। लेकिन कवन सा पहिनब ठीक ना कर पावत रहनी। एही बीच खाना खा के अजितेश सुत गईलन। पास में गोलू भी। साड़ी पहिनत-पहिनत आलमारी में रखल सलवार-कमीज पर नजर पड़ल। बहुत दिन से ना पहिनले रही। का मन में आईल। साड़ी उतार के उहे पहिने लगनी। शादी का बाद शरीर पर थोड़ा मांस तऽ आईले रहे। सलवार कमीज के फिटिंग थोड़ा सकेत ही रहे। आयना में देखत-देखत थोड़ा देर खातिर भुला गईनी कि हम शादी-शुदा बानी। प्रेम के आकर्षण अइसही होला।

पौने चार बजे में आज कुछ ज्यादा ही समय लागल। देखनी अजितेश सुतले-सुतले किताब पढ़तारे आ गोलू सुतल बा। हम उनका ओर बे देखेले बोलनी-

"हम आव तानी। दरवाजा बंद कर ली।" निकलत-निकलत उनकर हल्का आवाज सुनाईल अच्छा।

गोल पार्क पहुँच के एने-ओने देखे लगनी। रजत के पता

ना रहे। लेकिन हमरा मन में चोर रहे। लागत रहे सभे हमरे ओर देखऽता। घड़ी देखनी– अभी भी चार बजे में पाँच मिनट कम रहे। दिल के धड़कन बढ़ल जात रहे। सोचे लगनी बेकार के चक्कर में पड़ल बानी। ब्याहल औरत खातिर अईसन काम जंजाल बा। ना जाने कब केकर नजर पड़ जाई।

सोचलीं अगिला बस से लौट जाएब। इहे सोच के सड़क के दूसरा तरफ आ के खड़ा हो गईनी। निगाह आवे वाली बसन पर रहे। तभी ओनिए से ऊ आवत दीख गईलन। हमार सारा सोच कपूर जईसन उड़ गईल। जिन्स में दबावल धारीदार टी शर्ट। पैर में स्पोर्टस सू। लम्बा लम्बा डेग बढ़ावत उ एकदम से हमरा सामने आ के खड़ा हो गईलन। हमरा संभले के भी समय ना दीहलन। हमरा मुँह से कुछ निकले एकरा पहीले उनके आवाज गूंजल— "सॉरी भाभी, थोड़ा देर हो गईल हऽ।" हम खिसियाये के भान कईनी

"ठीक बा। भेंट त हो गइल ना।" अब हम जा तानी।

अरे–अरे। "एहतरे सेवक पर नाराज होखब त हमार का होखी। केतना देवी–देवता के मनवलापर तऽ आज हमार देवी दर्शन देली ह। थोड़ा दया करीं अधम पर।

हाथ जोड़ले रजत के चेहरा के भाव देख के हमरा हँसी छुट गईल। हँसी दबवला के बावजूद हम आपन मुस्कुराहट ना छुपा सकनी। मुस्कुरात–मुस्कुरात बोलनी–

अच्छा। जल्दी बताईं काहे खातिर बोलवनी ह।

"चली भाभी सामने कॉफी पीयत–पीयत बातो कर लीहल जाई।"

कहत–कहत रजत मुड़ गईलन। हम भी उनके पीछे–पीछे सामने कॉफी हाउस की ओर चल पड़नी। नीचे हॉल में ना घुस के रजत सीढ़ी से उपर चढ़े लगले। उपर तल्ला में केबिन बनल रहे। एगो केबिन के पर्दा बेयरा हटाके अंदर जाये के ईशारा कईलस। रजत हमरा के पहीले घुसे के ईशारा कईलन। हमरा बईठला के बाद उ सामने वाला पर बइठलन। तभी बेयरा दू गिलास पानी रखके आर्डर खातिर खड़ा हो गईल। रजत दू ढोसा आ कॉफी कह के ओके बिदा कइलन। ओकरा हटत भईल कि ऊ फटाक से उठके हमरा पास वाला कुर्सी पर बैठ गइलन।

हमरा अंदर तऽ पहीलहीं से हलचल होत रहे। उनका पास में अईला से करेजा धक–धक करे लागल। हम कुछ आगे सोची एकरा पहले ऊ अपना मजबूत बाँह में हमरा के कस लीहलन। हमार कसमसाईल देख के उ छोड़ दीहलन। हमरा अंदर जइसे खालीपन भर गईल। हम टुकुर–टुकुर उनके ओर निहारे लगनी। तभी उनकर हथेली हमरा कँधा पर पहुँचल। हमार गर्दन अपने आप घुम गईल। अब ऊ अपना दूनो हाथ से हमार सर पकड़ लीहलन– धीरे–धीरे उनकर मुँह हमरा ओरी बढ़ आईल। हमरा अपना शरीर पर कवनो बश ना रहे। उनकर ओठ हमरा ओठ पर पड़त भईल कि हमार मुँह अपने आप खुल गईल। उनकर जीभ हमरा मुँह के अंदर कब चल गईल हमरा पता ना चलल। साँस रुके लागल तब ग्यान फिरल। हम मुँह अलग करके कहनी –

"चलऽ सामने बईठऽ।"

रजत अच्छा बच्चा के तरह उठ के सामने बईठ गइलन

तभी बेयरा ढ़ोसा लेके घुसल।

घर में घुसनी तऽ सब कुछ सामान्य दीखल। अजितेश गोलू के लेके टी.वी. देखत रहस। हम सीधे बाथ रूम में घुसनी। मुँह हाथ धोके रसोई में गईनी। सूजी के हलवा बनवनी। दू प्लेट में लेके उनका पास आके बइठनी। दूनों के ध्यान टी.वी. पर रहे। अजितेश खात-खात—"कहलन बाह वेरी गुड।"

ना मालुम ई ऊ हलवा खातिर कहलन ना टी.वी. के सीन खातिर।

खैर। हमरा मन के चोर जवन रहे ओकरा शान्ति भईल।

रात में हम आदतन 10 बजे बिछावन पर चल गइनी। लेकिन नींद तऽ जईसे आवे के नामे ना लेव। 11.30 बजे अजितेश आ के पास में लेटलन। नीम बेहोशी के हालत में हम अजितेश के अंकवारी में भर लीहनी। लेकिन ऊनकर कवनों प्रतिक्रिया ना भईल। अब हमार नींद पूरा तरह खुल गइल रहे। शरीर के उत्तेजना दबावे से बाहर हो गईल रहे। हमार हाथ उनके शरीर सहलावे लागल। उपर से घूमत-घूमत नीचे पहुँच गईल। फिर तऽ आज तक जवन ना भईल रहे उहे भईल। हम अजितेश के नीचे रखके आपन दूनो पैर उनके दूनो बगल में रोप दीहनी।

कब नींद आ गईल। सुबह आँख खुलल त कमरा में बाहर से हल्का-हल्का रोशनी आवत रहे। अजितेश के गोरा बदन पर काला काला बाल बड़ा ही लुभावना लागत रहे। नीचे नजर गईल। एक बार त चूमे के ईच्छा भईल। लेकिन न जाने कईसे अपना पर कन्ट्रोल क लीहनी।

आठ

सुबेश खातिर डायरी के एक–एक शब्द दिमाग में सोचे के शक्ति छीनले जात रहे। उ किताब में पढ़ले रहस अईसन स्थिति गाँजा या चरस पीयला से होला। एक–एक लाईन दू तीन बार पढ़स। तभी 6.30 बजे के अलार्म आवाज दीहलस। माने अब उनका ऑफिस से निकले के समय हो गईल। समय से पहीले आफिस से निकलल आ समय से बाद में ऑफिस में रहल–दूनो बढ़िया ऑफिसर के रुतबा के खिलाफ समझल जाला। डायरी जहाँ तक पढ़ले रहस उहाँ एगो कागज डाल के ओके लिफाफा में रखलन। फिर ओकरा के एगो बड़ा लिफाफा में भरलन। फाईल के साथ ड्रावर में रखलन। तभी उनकर नजर कैलेण्डर पर गईल। आज तऽ शुक्रवार बा। माने दू दिन छुट्टी। फिर ड्रावर खोललन। ओमे से डायरी वाला लिफाफा निकललन। ओकरा के ब्रीफकेश में रख के बंद कईलन। फिर कम्प्यूटर लॉग ऑफ करके घंटी दीहलन। चपरासी आके ब्रीफकेश उठाके चल पड़ल। पीछे–पीछे शास्त्री भवन के लम्बा कॉरीडोर लाँघ के सीढ़ी से नीचे उतरलन। गेट का सामने ही गाड़ी खड़ा करके ड्राइवर खड़ा रहे। सुबेश के देखके गेट खोललस। पहीले ऊ बईठलन। ओकरा बाद चपरासी

उनका पास ब्रीफकेश रखके सलाम कईलस। ड्राइवर गाड़ी के गेट बंद करके सामने से आके अपना सीट पर बईठल।

इ रोज के रूटीन रहे। घरे पहुँच के भी सब काम के रूटीन जइसन ही रहे। सुबेश क पत्नी राममनोहर लोहिया अस्पताल में प्रशासक रहस। एम.बी.बी.एस. कईला के बाद ऊ सिविल सर्विस परीक्षा देके डि विभाग में क्लास वन सर्विस ज्वाईन कइली। ए अस्पताल में उनकर डेपुटेशन पोस्टिंग रहे। लेकिन, ईमानदारी आ दक्षता के कारण पिछला 10 साल से ऊ एही में कर्मरत रहस।

सुबेश के एके गो संतान रहे- लड़की। उ अमेरिका के नामी कॉलेज में रिसर्च करत रहे। अमेरिका सरकार के स्कालरशीप लेके मैत्रेयी उहाँ भर्ती भईल रहे। इहो एगो विचित्र संयोग रहे कि ऊ देखे में एकदम अपना दादी जईसन लागे। सुबेश अपना माँ के 20 साल वाला फोटो आ मैत्रेयी के फोटो एगो फ्रेम में एक साथ रखले रहस। माँ के ध्यान आवत-आवत, सुबेश के चेहरा पर एगो उदासी फईल गईल। संगे संगे मोबाईल से नंबर निलवले—

"माँ"

"हाँ सुबेश। का हाल बा हो?"

"ठीक बा। तू कईसन बाड़ू?"

"हमरा का होखे के बा। बिल्कुल भला चंगा बानी। मैत्रेयी से बात भईल रल?"

हाँ, आज ही सुबह फोन कइले रलऽ।

“कईसन बिया ओ?”

“फर्स्ट क्लास। जईसन ई उम्र में होखे के चाहीं।”

माँ आ मैत्रेयी के संबंध सुबेश के मालुम बा। रिस्तन के राह भी विचित्र होला। मैत्रेयी आ माँ कभी भी लगातार छः महीना एक साथ नईखे रहल। लेकिन दूनो के बीच प्रगाढ़ संबंध बा। सुबेश जवना परिस्थिति में पलल बढ़ल रहस ओमे इंसानी संबंध के कुछ ज्यादा अहमियत ना रहे। माँ घर में अनुशासन के प्रतीक रहस। बाबा जईसे बाहरी जीव। माँ–बाबा के कभी भी खुल के हँसल–बोलत सुबेश का नजर ना पड़ल रहे।

सुबेश का हल्का–हल्का याद बा। रायपुर आवे का दू साल पहीले के होली रहे। बाबा के तरह सुबेश भी कुर्ता पायजामा पहीन ले रहस। माँ भी सादा साड़ी पहिनले रहस। बाबा एगो बाल्टी में रंग बना के तैयार रहस। जईसे माँ निकलली पूरा बाल्टी उनपर डाल दीहलन। फिर त दूनो जाना में छीना झपटी शुरू हो गईल। बाबा के भी कपड़ा लाल हो गईल। सुबेश का लागल जइसे दूनो जाना में झगड़ा होता। उ रोये लगलें। माँ दौड़ के ओके गोद में लेके जोड़ से छाती से दबा लीहली। सुबेश का बड़ा ही अच्छा महसूस भईल रहे।

शनिबार सुबह नास्ता लेके सुबेश पढ़े वाला कमरा में गइलन। पत्नी अपना काम पर चल गईल रहली। सुबेश ऑफिस वाला ब्रीफकेश खोललन। चोर नजर से चारो ओर देख के ऊ डायरी निकललन। पन्ना पलट के आगे पढ़े लगलन—

12 फरवरी, 1987
गुरुवार

ठीक 11.30 बजे हम फोन का लगे रहनी। फोन बाजल। हमरा बोले के पहीलही आवाज आईल –

“हलो भाभी।”

“रौंग नंबर।” कहके हम फोन रख दीहनी।

सामने से अजितेश पूछलन—“केकर फोन रहल।”

“ना मालुम। रमेश भाई के पूछत रहल ह कोई।”

कह तऽ दीहनी लेकिन हमरा दिल के धड़कन तेज हो गईल। डर भी लागत रहे कहीं उनकर फोन अजितेश का हाथ में पड़ गइल तऽ का होई?

हम ध्यान बटावे खातिर गोलू के खिलावल शुरू कर दीहनी। ई लड़िका खाये का नाम से ही रोये पीटल शुरू कर देला। ओकर चिल-पें सुनके अजितेश के ध्यान टेलीविजन से हट गईल। उ कहले – का होता ई?

“एह तरह ना कईला से खाई का। रउरा का पता एके खिआवे खातिर का-का करे के पड़ेला।”

एने गोलू त चुप होखे के नाम लेत रहे। बाप के उपस्थिति में ओकरा सपोर्ट मिली, जानत रहे। हम खीझ के कहनी–

“ले जाई न। तनी घुमा के ले आईं बाहर से। आ एक पैकेट दूध भी लेते आएब।” अजितेश गोलू के गोद में लेके निकल गईले। हम संगे-संगे टेलीफोन पर झपट पड़नी। नम्बर मिलावत-मिलावत ओने से गंभीर आवाज सुनाईल “रजत हीयर।”

“काहे के फोन कईले रहलऽ ह?” हमरा मुँह से अनायास तू निकल गईल।

“इहो कवनो पूछे के बात बा। काल रात भर नींद ना आईल।”

“काहे सीमा ना रहस”—हम ब्यंग कईनी।

“फेर ओ औरत के नाम ले तानी, भाभी। ऊ चुड़ैल तऽ हमरा जान के दुश्मन बीया।”

हम आपन हँसी ना दबा पवनी। औरत खातिर दोसरा औरत के शिकायत से बड़ा आनंददायी बात ना होला। आ ओकरा पति के मुँह से सुने के आनंद तऽ असीम होला।

रजत के झुँझआईल आवाज आईल—

“हँस ली भाभी। चिड़ई के जान जाव, लड़ीका के खिलौना।”

“आहा रे! बेचारा चोंऽ चोंऽ!!!”

“भाभी ऽऽ प्लीज।”

“अब तऽ लागता कुछ करही के पड़ी।”

“भाभी अभी भी सोचते बानी। हमरा तऽ एक-एक मिनट एक युग जईसन लागता।”

“अच्छा सुनऽ। अभी अजितेश आ जईहन। फोन रखतानी।”

“फिर कब फोन करब।”

“रउरा फोन मत करब। हम खाली रहला पर मिस कॉल दीहब।”

“लेकिन एगो आग्रह बा।”

“बाय-बाय।”

“एगो किस भाभी– प्लीज।”

हम चुंबन के आवाज देके फोन रख दीहनी। थोड़ा समय लागल सामान्य होखे में। जईसे शरीर एगो तीव्र रसायनिक प्रतिक्रिया से गुजरल रहे।

14 फरवरी, 1987

शनिवार।

हमार आदतन सुबह–सुबह नींद टूट गईल रहे। अजितेश दोसरा तरफ घुम के गोलू पर हाथ रखले सुतल रहस। ई उनका घोर निद्रा के समय रहे। हम उठके बाथरूम की ओर बढ़नी कि टेलीफोन के घंटी बाजल। हमार तंद्रा भंग हो गईल। हम फटाक से फोन उठवनी। ओने से उहे रहस—

“हैपी वेलेन्टाईन डे, लव।”

हमरा रियेक्ट करे में पल भर लागल

“सेम टू यू।”

ओने से एगो किस के आवाज आईल। हमहूँ ओइसही आवाज दीहनी। अईसहूँ सुबह में आदमी के मूड बड़ा ही रोमांटिक रहेला। आ हमरा पर त रजत के रंग चढ़ चुकल रहे।

“हाँ डीयर। आज कईसे मिलल होई?”

“काहे? तहार हमरा घर में आईल मना थोड़े बा।”

घर में त हमार भाभी रहेली। आज तऽ हमरा अपना सुष्मिता से मिले के बा।

रजत के मुँह से पहीला बार सुष्मिता सुनके हमार रोआँ सिहर गईल।

"तऽ तूहीं बताव, कहाँ?"

"ओही जा जहाँ पिछला बार मिलल रहनी स।"

"कितना बजे?"

"तू बताव।"

"दू बजे। बाय।"

फोन रखके हम तेजी से सोचे लगनी। फिर सुबह वाला घर करचा शुरू हो गईल। नास्ता बनावल। खाना बनावल। गोलू के नहवावल। कपड़ा प्रेश कईल। अजितेश जाये के तैयार होत रहस। तभी धीरे से पूछनी–

"कब तक आवे के बा?"

"कवनो प्रोग्राम बा का?"

सवाल के जबाव सवाल अजितेश के लक्षण बा। लेकिन अभी हमरा नाराज होखे के वक्त ना रहे। आपन क्रोध दबा के कहनी–

ना एगो ब्लाउज सीये के दीहले बानी। ले आवे जाये के बा। 2½–3 बजे।

"हम 5 बजे के पहीले ना लवटब। तू चाभी ले ले जईह।"

कह के अजितेश निकल पड़लन।

एकर मतलब गोलू के लेके ही जाये के पड़ी। का करब Forbidden Fruit (निषिद्ध फल) खाये के लालच बड़ा तीब्र होला। ओकरा खातिर आदमी सब सह लेला। आत्म सम्मान भी भूल जाला।

गोलू के खिला के सुता दीहनी। हम बाल में शैम्पु करके ड्रायर से सुखावे लगनी। हल्का मेक अप करके के आयना में देखे लगनी। हाथ उठा के बगल पर नजर दीहनी। हम ऊ सेव ना करी। लाल आभा लींहले ऊहाँ के केशन से हमरा लगाव रहे। Deodrant छिड़क के ब्लाउज पहीननी। आज आपन पसंद के रंग वाला साड़ी पहिन के जाएब– ठीक कहले रहीं। एकर एगो बड़ा कारण रहे हमरा छाती के आकार। जब देखीं तऽ भगवान से सवाल करी – अरे भगवान ! 150–200 ग्राम मांस दे देत तऽ कवन नुकसान हो जाईत। ना होईत त हमरे कुल्हे से निकाल लेतऽ।

हमार नितंब कुछ ज्यादा ही भारी रहे। साड़ी पहिनला से उ आउर झलके लागे आ छाती के छोटापन ढंक जाव। अईसहूँ गोलू के भईला के बाद कमर के माप भी बढ़ गईल रहे। साड़ी ही अईसन ड्रेस बा जवना के जइसे चाहल जाव पहीनल जा सकेला। ढके वाला जगह के ढक लेला आ उभारे वाला के उभार देला।

पूरा ड्रेस करके देखनी तऽ अपने पर प्यार होखे लागल। आज रजत के भी बुझा जाई कि कवनो औरत से पाला पड़ल बा। अपना पर गर्व महसूस होखे लागल। कयगो शादीशुदा औरत के जिंदगी में अईसन प्यार के मौका मिलेला? खैर रजत के निराश ना होखे के पड़ी।

गोलू के हाथ पकड़ले गोल पार्क अइनी। ढाई बजत रहे। करीब 5–7 मिनट तक रजत कहीं नजर ना अवले। एगो जिन्स टी सर्ट पहिनले लड़की पहीलही से खड़ा

रहे। तभी स्कूटर पर एगो 21-22 साल के लड़िका आ के खड़ा भईल।

"हाय डार्लिंग!"

लड़िका बोललस। लड़की फटाक से स्कूटर के पीछे वाला सीट पर बैठ गईल आ एक हाथ से लड़िका के कमर पकड़ लिहलस। स्कूटर चल गईल। हम चारो ओर देखे लगनी। फिर धीरे-धीरे गड़ियाहाट के ओर पैर बढ़वनी। मन में एक किसिम के डर भी होत रहे। एके गो भरोसा रहे गोलू। थोड़हीं दूर गइल रहे कि सामने रजत दीख गईलन। देखत-देखत हमार सब नाराजगी उड़ गईल। "

सामने पड़त-पड़त पहीले गोलू के गोद में उठा लिहलन, आ बगल से एगो रेशमी रूमाल में लपेटल लाल गुलाब हमरा के पकड़वलन।

कतना कायदा जानऽता ई आदमी। हम मने-मने सोचनी। समय के तकाजा बुझ के हम फूल होंठ के पास ले आके इंतजार करे लगनी कब नजर घुमावतारन। कएक सेकेंड लागल। जइसे नजर से नजर मिलल हम फटाक से आपन होठ फूलपर रख दीहनी। आगे-आगे रजत-गोद में गोलू। पीछे-पीछे हम। भाभी, चली गोलू बेटा के आइसक्रीम खिआवल जाव। हमरा जबाव के जरूरत कहाँ रहे। सामनहीं एगो रेस्टोरेन्ट रहे- संगरिला। हमनी का घुस गईनी स। अंदर घूप अंधेरा रहे। रजत के पीछे-पीछे चल के एगो केबिन में घुसनी स। सामने कुर्सी पर गोलू के बइठा के हमरा के अपना पास वाला कुर्सी पर बईठे के ईशारा कइलन। हमरा बइठत भईल कि रजत के हाथ हमरा हाथ

के खोज निकललस। चौड़ा हथेली में हमार हाथ लागत रहे सेयान आदमी के गोद में बच्चा। अंगुली से अंगुली खेले लगले सन अपने आप। हम भूल गईनी कि सामने हमरे शरीर से निकलल बच्चा बा। सारा शरीर आ मस्तिष्क पर जईसे नशा चढ़त जात रहे। एही बीच तीन गो आइसक्रीम रख गईल बेचरा। गोलू का आईसक्रीम बड़ा पसंद रहे। उ आइसक्रीम खाए में मस्त रहे। रजत हमार हाथ अपना चोड़ा हाथ में ले लिहले आ धीरे-धीरे सहलावे लगले। उनकर अगुंरिन क नाखून हमरा तरहथी में गड़त रहे। हमरा पर एगो मीठा नशा चढ़े लागल। अचानक उनकर अंगूठा हमरा अगुरिन में फंस गईल। हम धीरे से ओके पकरि लिहलीं। ओकरे असामान्य आकार से हम चौंक गइलीं। बचपन में चीभल ऊख क गेंड़ा इयाद आ गईल। हम ओके मुँह में भरके चूसे लगलीं। धीरे-धीरे ओमे से रस चू के हमरा मुँह में भरे लागल। हम तंद्रा में डूब गइलीं। हमरा पोर-पोर में सैकड़ों मधु के झरना बहे लगलन स। कुछ क्षण हम इ अनुभव अपना अस्तित्व में घटित होत महसूस कईली। एह बीच समय क गति जइसे थम गईल रहे। पर कुछ अंतराल क बाद हम प्रकृतस्थ भईली।

"ना चलल जाव।" रजत का चेहरा पर उदासी दीखल। उनका आँख में कुछ देर आँख डाल के देखनी।

तूफान गुजर गईल। हम अपना खोल में लवट अइनीं। रजत के साथ लवटे के साहस ना भईल। टैक्सी में बईठ के कहनी— "ना तू अलग टैक्सी में आव।"

सुबेश आगे ना पढ़ पवलन। डायरी लिफाफा में रख के

ब्रीफकेश में बंद करके रखलन। दिमाग जइसे भाव शून्य हो गईल रहे। आँख बंद करके के कोशिश करे लगलन खुद के समेटे के। अभी कुछे देर भईल रहे कि नौकर आके कहलस- बाबु, स्नान कईल जाव। खाना तईयार हो गईल बा।

जा तानी। कहके सुबेश उठे के कोशिश कईलन। न जाने का मन में आईल। फोन मिलवलन—

"के?" माँ के आवाज आईल।

माँ के आवाज से उनका उम्र के अंदाज लगावल मुश्किल रहे। हजरों लाखों लड़की औरत से फोन पर बतीयवले बाड़न सुबेश। लेकिन माँ के जइसन मीठ आ सुरीला आवाज उनका कान में नइखे आईल। सुबेश पूछलन—"माँ कईसन बाड़ू?"

सुबेश, माँ— "हमरा का होखे के बा! तू आपन बताव।"

"हम बिल्कुल ठीक बानी।"

"खाना खइले बाड़ कि ना?"

"खाए ही जा तानी।"

"बहु माँ कहाँ बाड़ी?"

"ऑफिस।"

"अच्छा, बाबू पहीले खालऽ। फिर समय मिले त फोन करीह।"

"अच्छा माँ"।

फोन रख के सुबेश फिर सोचे लगलन माँ के बारे में। माँ के अलग-अलग समय के चेहरा सिनेमा के रील के तरह उनका सामने घुमे लागल। माँ में हमेशा अलग तरह

के उर्जा महसूस करस सुबेश। खाली एसे ना कि ऊ उनकर माँ रहस।

अभी जब एगो अलग रूप सामने रहे तऽ सुबेश के दिमाग जईसे शून्य भईल जात रहे। डायरी तऽ कवनों कहानी ना रहे। खाली एक तरह के इंगित रहे। ना कि पूरा तरह माँ के फैंटेसी। सुबेश का कुछ समझ में ना आवत रहे। बाबा माँ एक साथे लंबा जीवन बीतवले रहस। बाबा के मरला के बाद भी माँ उनकर घर छोड़े के तइयार ना भइली। बाबा के छोड़के माँ कोई दूसरा से प्यार करत रहली एपर विश्वास कईल कठिन लागत रहे। खैर, एकबार पूरा डायरी पढ़ ली। तबें कवनों बात बुझाई। सुबेश स्नान घर में ढुक गइलन।

नौ

रविवार पत्नी घर में रहस। एहसे डायरी निकाल ना पवलन सुबेश। सोमवार के ऑफिस पहुँच के रूटीन काम देखलन। कम्प्युटर पर मेल चेक कईलन। जरूरत के मुताबिक डाक विभागन में बाँट के रजत काफी के चुस्की लेबे लगलन। ई समय उनका खातीर बड़ा ही महत्वपूर्ण रहे। आज के ऊ सब कामन के बाड़े में विचार करे लगलन जवन उनकर व्यक्तिगत जिम्मेवारी में रहे। कम्प्युटर पर एगो document खोललन। पासवर्ड मँगलस कम्प्युटर। सुबेश पासवर्ड में हमेशा अंक व्यवहार करस। कम्प्युटर पर आ गईल—इकीसवीं सदी में परिवार और तलाक। एक-एक पंक्ति पर उनकर नजर फिसले लागल। शुरु के पैराग्राफ भूमिका रहे। फिर शादी के आवश्यकता के बारे में रहे। दूसरा पन्ना के तीसरा पैराग्राफ कुछ ठीक ना लागल सुबेश का। कर्सर ऊहाँ ले अइलन आ टाईप करे लगलन—

ज्यादातर लोग शादी के पूर्ण विराम के रूप में सोचेला। युग-युग से अईसन धारणा आदमी का मन में घर कइले बा। शादी के बाद उनका जिदंगी में कवनों संपर्क वाला परिस्थिति पैदा ना हो सके। ज्यादा से ज्यादा क्षणिक उन्माद आदमी के वशीभूत कर सकेला। लेकिन परिवार के प्रति जिम्मेवारी ओ परिस्थिति के ज्यादा देर टिके ना देला। शादी टूटे वाला स्थिति पैदा भइल कठिन हो जाला।

लेकिन अईसन सोच एक खास तरह के विचारधारा पर पैदा भईल बा। वर्तमान समय अईसन विचार के चुनौती दे रहल बा। आज का दिन में विवाहेत्तर संबंध क्षणिक उन्माद तक सीमित नईखे रहत। एकरा साथ रोमांस, सिद्धांत, पौराणिकता आ सबसे उपर गंभीर आशक्ति (Intense emotion) जुड़ गईल बा। विवाहेत्तर संबंध अब कुछेक लोग तक सीमित नईखे रह गईल। कारण चाहे जवन होखे अधिक से अधिक लोग का जिंदगी में अईसन संबंध कायम हो रहल बा। अलग-अलग आदमी का संदर्भ में विवाहेत्तर संबंध के अलग-अलग मतलब बा। आ ई मतलब के ठीक-ठीक स्वरूप उहे समझ सकेला। लेकिन इ मतलब समझ पावल कवनों साधारण बात नईखे। तरह-तरह के पारिवारिक आ सामाजिक बाधा, सबसे बड़ा रुकावट हो ला उ मतलब समझे में। एकरा अलावा Temptation से उत्पन्न confusion दोसर रुकावट बा। तीसरा रुकावट बा कवनों तरह के Trap में पड़ल।

आदमी का जिंदगी में विवाहेत्तर संबंध बड़ा ही गंभीर विषय बा। एकराके समस्या कहके एकर गंभीरता छोट हो जाई। तलाक खातिर विवाहेत्तर संबंध एगो बैध कारण हो सकता। लेकिन एकरा खातिर विवाहेत्तर संबंध के परिस्थिति विचार कईल एगो आवश्यक शर्त भईल जरूरी बा।

सुबेश के हाथ रुकल। उ फिर से एक-एक गो शब्द पढलन। अब समय रहे मीटिंग के। विषय बंद कर के कंप्युटर पर आज के व्यस्तता वाला icon क्लिक कईले।

इंटरकॉम पर पूछलन के मुलाकाती बा? आज चार बजे के बाद कवनो मुलाकात ना रहे। सुबेश आपन ब्रीफकेश खोललन। डायरी के पन्ना पलटावे लगलन।

16 फरवरी, 1987
सोमवार

अपना दिमाग से सारा कुछ झटक के निकाले के कोशिश करत-करत कुल 36 घंटा बीतवनी। सुबह घर के काम निपटा के अजितेश के कालेज विदा कइनी। फिर गोलू के नहवा के खाना खिला के सुतावे के कोशिश करे लगनी। तभी फोन के घंटी बाजल। पूरा बजे के पहीलही हम रिसिवर उठा लिहनी। 'हाय'—मुँह से निकलल भइल कि ओने से अजितेश के आवाज सुनाईल—'का भईल—दोसरा कोई के फोन के इंतजार रहल का?'

"अइसन कहाँ भाग्य बा?"

हम रोमांटिक आवाज में कहनी

'खैर बताई का बात बा?'

'ना, आज हो सकता एगो रजिस्ट्री चिट्ठी आवे।'

'घरे में रहे के बा तऽ।'

हम कहाँ जाईब?

'ठीक बा रख ऽ तानी।'

बाय।

'हे भगवान।' फोन रखके हमरा मुंह से निकल भईल। अजितेश का कवनो शक नानु भईल होई। ना-ना, ऊ शक करे

वाला आदमिए नइखन। आ हम ओइसन कहलही का बानी। हमरा अजितेश के सरलता आ सच्चाई पर पूरा विश्वास रहे।

इहे सोच विचार में गोलू कब सुत गईल हमरा बुझइबे ना कइल। ओकरा के सुतल देख के हमरा सुध आईल। हम झटाक से उठ के नहाए के तैयारी करे लगनी। अभी स्नानघर में घुसते रहनी कि फोन में घंटी बाजल। अबकी बार सावधान रहनी। गंभीर आवाज से हलो कहनी। ओने से परिचित आवाज आईल—

‘हाय जान। मुड ठीक नईखे का हमरा लव के?’

‘ना-ना। सब ठीक बा।’ हम जइसे संभाले के कोशिश कइनी।

‘का होता?’

‘नहाये जा तानी।’

‘इतना देर से?’

‘अइसही होला शादीशुदा औरत के जिंदगी।’

‘हमार प्यार का साधारण शादीशुदा औरत बा।’

‘त दोसर का?’

‘उ त असली हीरा बा जवन तरासल नइखे गईल अभी।’

हमरा मन के खालीपन में जइसे आक्सीजन भर गईल। चेहरा पर मुस्कान आ गईल।

‘रजत जईसन जौहरी का हाथ में ही शायद तरासल लिखलबा।’

‘इ त नइखे मालूम भाभी कि हमरा तरासे के मौका मिली कि ना लेकिन हम हीरा पहचाने में कवनों गलती नइखे कईले।’

‘अच्छा हमार जौहरी। अब थोड़ा मौका दीहल जाव कि थोड़ा नहा धोवा लीं।’

‘अनुमति दी भाभी तऽ हम नहवा दीं आपके।’

‘फोन पर’

‘कही तऽ आ जा तानी।’

‘खूब होता ना! पिटाये के नइखे नू?’

‘हाय भाभी कब पिटबु हमरा के।’

‘तहरा के थोड़े..।’

‘अब समझ में आईल भाभी। देखी ना उ त ऽ आपके पीटाई खातिर तइयार हो गईल।’

‘ए बदमाश, कहत त ऽ बाड़ भाभी आ बात सब अइसन वइसन।’

‘भाभी कहे में एगो रस बा सुस्मिता।’

‘तऽ अबसे सुष्मिता ही कहीह।’

‘आई लव यु सुष्मिता, आई लव यू।’

‘मी टू रजत’

बात थोड़ा देर खातिर रूक गईल। हम कहनी

‘त ऽ रखीं फोन?’

‘ना डालिंग प्लीज।’

‘त ऽ नहाई ना।’

‘आज हम नहवा देतानी।’

‘ओकरा खातिर इंतजार करे के परी अभी।’

‘कतना, जान।’

समय बताई, डीयर।

तभी। डोर बेल बजल। हम कहनीं—“लागता कोई आईल। रखतानी बाय, टेक केयर।”

अजितेश के नामे के रजिस्ट्री ले के डाकिया रहे। उ रजिस्ट्री रहे मध्यप्रदेश लेक्चरार नियुक्ति परिषद से। अजितेश के साक्षात्कार 13 मार्च 1987 (शुक्रवार) के भोपाल में रहे। ई चिट्ठी जइसे अलादीन के चिराग जईसन मिलल। समय सोचे के तरीका भी बदल देला। पिछला साल जब अजितेश एकरे लिखित परीक्षा देके लवटल रहस तऽ साफ-साफ कहले रहनीं—अजितेश, चाहे आप जहाँ कहीं के भी परीक्षा पास हो जाई, हमरा कलकत्ता छोड़ के नइखे जाएके।

आज उहे परीक्षा के साक्षात्कार के चिट्ठी देख के हम दोसरे हिसाब लगावे लगनी।

अजितेश के लवटत ना भईल कि हम चिट्ठी देके पूछ भइनी—कइसे जाईब भोपाल आ कतना दिन लागी? अजितेश अपना स्वाभाविक शांत भाव से जवाब दिहलन—‘काल्ह पता करीले फेयरली प्लेस जाके। ना जाने सीधा ट्रेन बा कि ना।’

‘साक्षात्कार के एक दिन पहीले पहुँचे के चाहीं।’ हम अपना उत्साह के दबावत-दबावत कहनी।

‘हाँ, लेकिन काल्हे सब खबर मिली।’

‘ऊ रजत तऽ बाहर जात वात रहेले। उनका से पूछीं ना।’

अजितेश फोन करे लगलन। संगे-संगे हमरा ओर ताक के कहलन—“लेकिन हम अकेले जात बानी।”

सोचलीं— ‘‘अच्छे बा। ई अब तक समझत बाड़न हमहूँ भोपाल जाये खातिर धंधा करत बानी।’’ थोड़ा नखरा वाला सुर में कहनी—

‘ठीके त बा। साक्षात्कार कवनों हमरा देबे के बा कि हम जाएब।’

अजितेश कुछ कहे जात रहस तब तक शायद लाईन पर रजत मिल गईल रहस। उ अपना आवे जाये के बारे में बतीयावे लगलन।

बाद में ठीक भइल अजितेश 11 मार्च के रवाना होइहें आ ओने से रविवार के वापस अइहें।

ओह दिन से हमरा खातिर 11 मार्च जइसे एगो विशेष तारीख हो गईल। जब फुर्सत मिले खाली 11 से 14 मार्च बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार-चार दिन के बारे में ही सोंची।

इंतजार के समय बड़ा लंबा हो जाला। बाईस गो दिन निकालल हमरा खातिर जइसे बरसन बीतल। हाँ, एगो बात जरूर रहे। घर के सब काम में हमरा एक तरह के सुकून मिले लागल। हलांकि सब काम पहीलही का तरह रहे लेकिन ओ सब में मन लागे लागल। हमरा स्वभाव में ई परिवर्तन अजितेश महसूस कइले कि ना कुछ ना बुझाइल। लेकिन हम खुद ए बात के पूरा तरहसे महसूस करीं अजितेश खाना खा के टी.वी. देखे लागस। हम आदतन सुत जाईं। जब उबिछावन पर आवस त हमरा होश ना रहे। लेकिन एह दरम्यान उनके बिछावन पर आवत ना होखे कि हमार नींद खुल जाव। उ जइसे लेटस हम करवट बदल के

उनका पर बाँह रख दी। एकाध दिन अजितेश हमरा पहल के जवाब देस। लेकिन ज्यादा समय धीरे से हमार हाथ हटा देस। अईसन लागे जइसे उनका अइला से हमरा नींद में खलल पड़ गईल होखे आ एकर जिम्मेवार उ बाड़न। उनकर व्यवहार कभी-कभी बाप जईसन लागे। हमार मन छटपट करत रह जाव।

एह बीच करीब-करीब रोजे रजत से दुपहर में बात होखे। खाली छुट्टी के दिन जहिया अजितेश घर में रहस ओह दिन बात ना होखे। एक दिन गलती से दरवाजा खुलल रह गईल रहे। हमनी फोन पर बतीयावत रहनीसन। बातचीत के क्रम फैन्टेसी वाला स्तर पर पहुंच गईल रहे। हमार मन आ शरीर पूरा तरह उत्तेजित हो गईल रहे। हठात एगो हाथ महसूस भईल। नजर फिरवनी त अजितेश रहलन। हमरा त ऽ पैर के नीचे से जमीन खिसक गईल। जइसे तइसे कह पवनी—

"अजितेश आ गईल बाड़न। लीं उनके से बतीया लीं।"

अजितेश पूछलन—

'के ह?'

हम फोने पर मुँह रख के कहनी 'रजत जी। पूछत रलेहन 11 तारीख के स्टेशन कइसे जाईब।'

फोन अजितेश के पकड़ा के हम हट गईनी। किचेन के ओर जाये के पहीले बेसिन के पानी खोल के मुंह धोवनी। फिर मुँह पोछत-पोछत किचेन में चाय बनावे लगनी।

'अजितेश के आवाज आईल का होता, आव एने।'

'चाय लेके आवतानी। हम बोलनी।'

चाय बनावे में जतना समय लागल ओह में हमार सामान्य अवस्था लवट आइल।

अजितेश चाय के चुस्की लेत-लेत कहले 'सुष्मिता, हम सोच तानी के चार दिन के त बात बा। तू अकेले मैनेज ना कर सकबू का?'

एहीसे त ऽ कहत रहनी ह जे हमहूँ साथे में चलती। घुमलो हो जाईत।

'देख, एक दिन के तऽ काम बा। ठीक से घुमलो ना होई। आ फिर रुपया पैसा के भी त सोचे का बा।'

रहे दी आपन सोचल। हम अकेले रह लेब।

पहीला बार बा तऽ। हमरो ठीक नइखे लागत।

अजितेश के मूड देख के हम चेहरा पर मुस्कुराहट ला के कहनी।

'सुष्मिता अतना कमजोर भी नईखी कि उनकर कोई कुछ बिगाड़ ली। आप मन खराब मत करीं। थोड़ा तैयारी कर लीं साक्षात्कार के।'

'थैंक यू माई डीयर। थैंक यू!'

माथा हिला-हिला के अजितेश जइसे कृतज्ञता जाहिर करे लगलन।

आखिर 11 मार्च आ गईल सुबह से ही हमरा मन आ शरीर में बंसत के हवा लागे लागल। घर के काम सब पुराने रहे लेकिन ओ सब के निपटावे में हमरा आज सुस्ती ना लागत रहे। बीच-बीच में अजितेश के भी सफर में कईसे सावधान रहे के चाही समझा आई। करीब 12 बजे

उनका के कहनी कि नहा खा के तैयार हो जाईं। 3 बजे ट्रेन रहे। डेढ़ बजे के करीब रजत आ गईले।

अजितेश कहले—'रजत एकबार चाय पी लेहल जाव।'

'ठीक बा भैया।'

हम कीचेन में चाय बनावे चल गईनी। दूनो जाना ट्रेन आ भोपाल के बारे में बतियावे लागल लोग। सुनल जाला जे दूगो औरत चुप-चाप ना बईठ सके। लेकिन हमार अनुभव त उल्टा बा। दू गो मरद जब बतियावे लागेला त स्थान, पात्र या विषय के कवनों खयाल ना रहेला। हम चाय ले के अइनी। रजत से आँख टकराईल। हम नजर के भाषा से ही सावधान रहे के संकेत दीहनी।

दू बजे के करीब दूनो जाना निकल गईल लोग। गोलू रोवे लागल। ओकरा के मनावे खातिर हमरा खासा मेहनत करे के पड़ल। आखिर रोवत-रोवत गोलू सूत गईल। फिर हमरा अन्दर के सुष्मिता जागे लागल। देखनी पौने तीन बज गईल। हम झट से उठनी। आँख मुँह में पानी डलनी। केश में कंघी कइनी। हमार केश बड़ा-बड़ा रहे। सर के बीचो-बीच बड़ा वाला क्लीप लगा के पीछे खुलल छोड़ दीहनी। ड्रेसिंग टेबुल के सामने बईठनी। चेहरा पर हल्का फेस क्रीम लगवला के बाद आँखन पर हल्का आई ब्रो घुमा लीहनी।

लिपिष्टिक के रंग चुने में थोड़ा देर भईल अंत में ठीक कइनी-ना लिपिस्टिक लगावल ठीक ना होई। खाली Moisturizer लगवनी। आयना में निहरला पर काफी परिवर्तन दीखल। असल में अंदर के भावना मेकअप से ज्याादा खूबसूरती आवेला।

फिर ड्रेस के बारे में सोचें लगनी। मनेमन ठीक कईनी-ना सबसे बढ़िया होई completely careless साड़ी हमरा कभी पसंद ना आवेला। संभाले में ही टाईम निकल जाला। अबहीसे नाइटी पहिनल भी ठीक ना होई। अंत में एगो पुरान सलवार कमीज निकलनी। थोड़ा छोट भगईल रहे जवना से हमार छोटाई ढंक जात रहे। पहिने में थोड़ा असुविधा भइल लेकिन पहीनला पर हमार मन में पंख लाग गईल। ओढ़ना सोफा पर रख के घरे में चल फिर के खुद के अलग-अलग कोण से आयना में देखे लगनी। पीछे वाला हिस्सा कुछ ज्यादा ही ऊँचा दीखत रहे। मन में कुछ नया आईल। हील वाला सैंडल ले अइनी। ओमें पैर डाला के कएक कदम चले के अभ्यास कइनी। फिर मुड़ के आयना में देखनी अंदर से आवाज आईल—

'आज कत्ल होखई के पड़ी।'

घड़ी पर नजर पड़ल। अरे बाप रे। चार बज गईल। रजत के लौटे के समय हो गईल। हम जल्दी से सैण्डल उतार दीहनी। टी.वी. चला के सोफा पर बइठ गइनी। मन के अंदर में तूफान के दबावे के कोशिश करे लगनी। देखत त टी.वी. रहनी लेकिन कान बाहर रहे। तभी डोर बेल बाजल। हम झटाक से उठनी। दरवाजा के पास पहुँचला पर ध्यान आइल। फिर लवट के ओढ़ना डलनी काँध पर। दिल के धड़कन बढ़ गईल। दरवाजा खोलनी हम। एके पल में जइसे हवाई जहाज के क्रैश लेन्डिग हो गईल। सामने सीमा रहे।

'आव सीमा।'

‘का कर तानी भाभी।’ ऊ कहलस।

‘कुछ ना। अबगे गोलू सुतल ह। अजितेश जी के जाये का समय बड़ा ही तंग कइलस ह।’

‘कब लवटब भईया जी।’

‘शनिवार के।’

बात बढ़ावे के क्रम में पूछनी

‘रजत जी अभी लवटनी ह कि ना?’

‘ना अभी कहाँ! कह गइले ह चार बजे तक आ जाईब।’

‘हाँ, तीन बजे के ट्रेन रहल। अब तक तऽ आ जाये के चाही।’

तभी स्कूटर के आवाज आईल।

सीमा भाग के दरवाजा से निकल के सामने चल गइली। हमार मन बुझ गईल। का-का सोच लेहनी हऽ एतने देर में। बैशाख के बादल जइसन सारा विचार पल भर में बिखर गइल। धीरे-धीरे चल के सीमा के पीछे खड़ा हो गइनी। खुद के लाचारी पर क्रोध आईल-दू नम्बर भईल सोच के। रजत के ओर निहारे लगनी। नजर टकराईल। हमार दुःख आ उनकर मजबूरी दूनों आदमी के आँख के व्यक्त भईल। रजत के आवाज आईल—

‘ट्रेन समय से छूट गईल हऽ, भाभी। भैया आराम से सवार हो गइनी हऽ।’

‘थैंक-यू, रजत जी।’ हम चेहरा पर मुस्कुराहट लावे के कोशिश कइनी।

रजत जबाव दीहलन

‘थैंक यू अइसे दीहब त थैंक यू के स्टौक खतम हो जाई भाभी।’

‘इ खतम होखे वाला स्टौक ना ह।’

हम जबाव छोड़ दीहनी।

‘अच्छा भाभी, कवनो काम होखे त बता देव।’

सीमा का पीछे-पीछे सीढ़ी चढ़त रजत सर घुमा के कहलन। हम ध्यान दीहनी सीमा के नजर सामने बा। रजत गर्दन घुमा के ओठ आ जीभ से कुछ ईशारा कईले। हम जबाव ना दे पवनी। लेकिन हमरा अंदर रजत के हासिल करे खातिर तीब्र भावना भर गईल। देखऽ तानी, सीमा कब तक रोक पावतारी? गोलू जाग गईल। ओकरा में अझुरा गईनी। रात में खाना बनावे के ना रहे। खाली गोलू के दूध गरम करे के रहे। कर लेब, कर लेब करके 9 बज गईल।

रात भंर नींद ना आईल। करवट बदल-बदल के सुबह हो गईल। दिन उठ गइल रहे। ध्यानस्त होखे में समय लागत। खिड़की पर नजर गईल। देखनी रजत हाफ पैंट आ टी सर्ट में तेजी से आवत रहस। जइसे हमरा से नजर मिलल ऊ थमक के खड़ा हो गईलन। हाथ हिलावे लगलन। हमार हाथ भी अपने आप हवा में उठ गईल। हाफ पैन्ट के नीचे पैर काला बाल से भरल रहे। टी सर्ट में छाती आऊर चौड़ा लागत रहे।

बिना बनावल दाढ़ी। सब मिला के हम रोक ना सकनी बुदबुदाये लगनी (TDH) Tall Dark Handsome) ध्यान दीहनी त समझ में आ गईल उपर तला पर सीमा

भी खड़ा रहस। आ रजत हाथ उपर उठा के हिलावे लगलन। आँख बंद कर के सोचे लगनी।

12 मार्च 1987

मुड खराब रहे।

जइसे तइसे खाना बनवनी।

गोलू के नहवा के खिलावत रहनी। तभी फोन के घंटी बाजल। दीवाल घड़ी पर नजर गईल 11.30 बजल रहे। सोचनी अजितेश के फोन होई। उठवनी—'हाय लव।'

एक बारगी सारा शरीर काँप गईल। हम हजारो लोग से फोन पर बात कइले होखब लेकिन रजत के आवाज हमरा खातिर Anesthetia (बेहोशी सुँघावे वाला रसायन) जईसन काम करे। हमरा मूँह से कवनो आवाज ना निकलल।

'का भईल जान, हमरा से नाराजगी बा का?'

हम खँखार के गला साफ कईनी। बोलनी—'हमरा नाराज होख के का हक बा?'

'एही से तऽ बुझाता हमरा प्यार में कमी रह गईल बा।'

'शादी-शुदा जिंदगी में प्यार के मतलब बेमाना होला।'

'लेकिन डीयर, प्यार में तऽ कहल जाला उम्र, जात, अवस्था कुछ ना दीखेला।'

'उ सब किताबी बात ह रजत। वास्तव में अंसभव बा।'

'प्यार का होला हमरा नइखे मालूम। बस एतने बुझाता कि हम सुष्मिता के बिना ना जी सकब।'

'लेकिन हमरा तऽ अइसन नइखे लागत।'

'झूठ सुष्मिता झूठ। सुष्मिता, यू लव मी।' रजत के आवाज उत्तेजित हो गईल।

हम बात संभाले के कोशिश कइनी

'हाँ रजत। हमार भी त मन बेचैन बा। लेकिन का कईल जा सकेला?'

'सुष्मिता हम कब से ई चार दिन के इंतजार करत रनीहऽ।' जवना से एक दिन अईसही चल गईल।

'त बताव ना का कईल जाव?'

'काल शाम में तहरा के देख के हमार रात भर पागल वाला हालत रहे। आ उ सीमा के बच्ची नाक बजा के सुतल रहे।'

'त चल अइत हम त जगले रहनी।'

'सच में सुष्मिता! हम रात में आ सकीला।' यू आर माई लव रजत अल्वेज वेलकम।

'अच्छा अभी का करतारू?'

'आवे के मन बा का?'

'यदि जान के कवनो असुविधा ना होखे?'

'त अभी आ जा।'

'ठीक बा।'

फोन के लाईन कट गईल।

हम सोचनी रजत अईसही कह देले होईहे। देखनी गोलू सुत गईल बा। ओकरा देह पर चादर डाल के हम नहाए के तैयारी में लाग गईनी। धोवे वाला कपड़ा एकट्ठा करके बाथ रूम में ढूकब कि दरवाजा पर दस्तक भईल।

'के?' आवाज देत-देत दरवाजा के छिटकिनी खोलनी।

'वाऊ।'

उनके अंदर आवे के जगह बनाके दरवाजा बंद करे लगनीं।

मुँह फिरवनी कि रजत एकबारगी हमरा के अपना बाँह में जकड़ लीहले। उनका मजबूत बाँह में हमार शरीर जईसे चिपक गईल। कएक सेकेन्ड हमार कवनों ज्ञान न रहे। तभी एक हाथ से हमार ठुड्डी पकड़ के हमार मुँह अपना मुंह के पास ले आके रजत होंठ पर होंठ रख दीहलन। उनकर होंठ हमरा होठ के दरकचे लागल। हमार मुंह अपने आप खुल गईल। उनकर जीभी हमरा मुंह में घुस गईल। कब हमार जीभ उनके जीभ से खेले लागल ना बुझाईल।

हमरा के गोद में उठा लीहलन रजत। ओही हालत में ड्राइंगरूम से सोफा पर रख दीहलन। थोड़ा राहत मिलल। सोफा पर पास-पास बैठ के फिर हमरा के आलिंगन में भर लीहलन। ए बार एक हाथ से हमार सर पकड़ के सारा मुँह पर चुम्मा के बरसात कइले जात रहस। दोसर हाथ हमरा छाती पर घुमावे लगलन। हमरा पर एगो नामालूम बुखार चढ़े लागल। हम आ रजत अपिरिचित त ना रहनी लेकिन अबहियों अपरिचय के कुछ क्षेत्र रहलन स। अपरिचय क उक्षेत्र तेजी से अचानक आइल बाढ़ में डूबे लगलन स। लागल कि ई बाढ़ सवँसे अस्तित्व के बोर दिही लेकिन तबे बोध क एगो लहर ओकरा समानांतर चेतना के जाग्रत कई दिहलस हमनी आ संयत हो गइनीं।

मम्मी-मम्मी के आवाज सुन के होश फिर आईल। एक झटका से अपना के मुक्त कईनी। बेडरूम के ओर बढ़नी।

ओने से गोलू आँख मलत-मलत आवत रहे। ओकरा के गोद में उठा लीहनी। पहीले जाके दरवाजा खोलनी। बाहर देखनी कोई ना रहे। एह समय में कॉलनी एकदम सुनसान हो जाला।

ड्राईगरू में अइनी। रजत के हाथ में अखबार रहे। काफी समय मिलल रहे उनका संयत होखे खातिर। हम मुस्कुरा दीहनी।

'चाय ले आवतानी, रजत जी बईठीं।'

'ना हम पीछे आएब।' कहके उ उठ गइले।

'हम पीछे-पीछे दरवाजा तक अईनी। गोद में गोलू।'

'थैंक्यू रजत।'

'यू आर वेलकम'

'दरवाजा बंद कर के भीतर अइनी। गोलू के बइठवनी। टी.वी. चला दीहनी।'

सोफा पर लेट के आँख मुँद के पिछला आधा घंटा फेर से महसूस करे के कोशिश करे लगनी। न जाने कब नींद आ गईल। गोलू के मम्मी-मम्मी के आवाज से नींद टूटल त तीन बज गईल रहे।

शाम बड़ा ही खाली-खाली लागत रहे। गोलू के लेके सामने पार्क में बईठनी। सीमा भी आके पास में बईठ गईली। एने-वोने के बात भईल। कहे लगनी-देख ना, उनका ना रहला पर लागत घर में कवनो कामे नईखे।

सीमा—"भैया त परसो आयब ना।"

"हाँ, लेकिन लागता कतना दिन से अकेले बानी।"

'सीमा मुस्कुरा पड़ली'

'बाह भाभी, बस दू दिन में ही।'

'ना हो, बस अइसहीं।'

'अच्छा भाभी, भैया के साथ का रोज-रोज?'

'सीमा कान के पास फुसफुसाईल।'

'रोज-रोज संभव बा का? तू आपन बताव ना। रजत त बड़ा तेज दीखेलन।'

'रोज-रोज! अरे, उनकर चले त हर समय! बाप रे बाप, हम त अगुता गईल बानी।'

'अच्छा! दिनों में?'

अरे हाँ भाभी। आजुए। एकतऽ खाये देर से आइल रहलन हऽ। आ देखलन कि मम्मीजी (सास) सुतल बाड़ी। बस शुरू।

दिमाग में दुपहर वाला सीन एकबार फिर घुमे लागल। हम खुद के सीमा के जगह पर महसूस करे लगनी।

रात के करीब आठ बजे हम गोलू के खिलावत रहनी। गोलू के खिलावल हमरा खातिर सबसे बड़ा कसरत रहे। तभी दरवाजा के घंटी बजल। रजत आ सीमा रहे लोग। रजत जिन्स पर एगो कुर्त्ता डलले रहस। हमरा कहे के जरूरत ना पड़ल। ढुकते रजत हाथ जोड़लन।

'नमस्ते भाभी।'

अकचका के उनके मुँह देखे लगनी। चेहरा पर कवनो बनावटीपन ना रहे। बिल्कुल सामान्य। हमरा बाध्य होके कहे के पड़ल 'नमस्ते।'

सोफा पर बइठ के रजत ही कहलन—

'सीमा कहली ह भाभी अकेले बाड़ी चली एक बार मिल आवल जाय।'

हम सीमा की ओर देखनी। उ अकचका के बात बदलली।

'खाना ओना बन गईल का भाभी।'

'अकेले में का बनावे के बा। बस अइसहीं।'

'लागता भैया खूब याद आवतानी।

'सीमा आगे कुछ कहस एकरा पहीलही रजत बात कटलन—'अरे कहीं त हम आपके एहीजा सुत जा तानी।'

'ना। ओकर जरूरत ना पड़ी। हमरा के इतना भी कमजोर मत समझब। बस थोड़ा मन उदास हो गईल बा। अच्छा, बइठी सभे हम चाय बनावत बानी।'

कह के हम उठे लगनी। फिर दूनों जाना उठ गइले अजितेश भैया के अइला पर फिर चाय पीयल जाई। हम गेट तक छोड़े अइनी।

'अच्छा, दरवाजा ठीक से बंद कर लेब।' रजत मुड़ के सलाह दीहलन। संगे-संगे चेहरा पर उहे शरारत आ गईल रहे। लौट के देखी तऽ सोफा का नीचे एगो कागज के टुकड़ा पड़ल रहे। उठा के देखनी त लिखल रहे। Keep the door open please.

13 मार्च 1987
शुक्रवार

अंग्रेजी कैलेन्डर में दिन रात में बदलेला। रात बारह बजे तारीख बदल जाला। एक हिसाब से तारीख बदल गईल रहे—आ हमरा जीवन के हिसाब भी। अभी तक हम अपना मन के समुझावत रहनी कि रजत के साथ हमार संबंध रोमांस से भरपूर एक तरह के adventure बा। अभी तक जेतना तरह के संबंध उनका साथ संभव भइल रहे ओकरा के पाप के संज्ञा हमार मन ना देत रहे। स्त्री-पुरुष के लैंगिक मिलन के बिना शायद पापबोध ना भईल एक तरह के संस्कार बा। या त कहीं ना कहीं ई समझ निहित बा कि लैंगिक मिलन ही नारी पुरुष के बीच असली संबंध होला। एकरा अलावा मर्द औरत के बीच चाहे जतना भी घनिष्ट संपर्क काहे ना होखे कवनो पापबोध ना उपजे।

हम दरवाजा बंद करके बिछावन पर लेट गइनी। पिछला कएक महीना के घटना एक-एक करके हमरा मस्तिष्क के पर्दा पर उभरे लागल। पिछला दिन महीना के हरेक तारीख आ दिन हमरा स्पष्ट याद आवे लागल। गोलू का जन्मदिन पर रजत के प्रति आकर्षण के शुरुआत भईल। फिर डायमंड हारबर में पिकनिक। फोन पर घंटन बातचीत के सिलसिला जवन नशा में बदल गईल। फिर स्लोमोशन रिप्ले जइसन पिछला दू दिन के एक-एक पल घुमे लागल।

काल्ह दूपहर के घटना हमरा शरीर में तपिस मरे लागल। गोलू के ओर ध्यान गईल। सूत गईल रहे। हम उठनी। दबे पाँव ड्राईंग रूम में गईनी। लाइट जलवनी। देखनी 12.30

बजल बा। पानी-पीयनी। का मन में आईल। धीरे से दरवाजा खोलनी सामने घूप अंधेरा के सिवा कुछ नजर ना आईल। दरवाजा धीरे से भिड़ा के ड्राइंग रूम में आ गइनी। ड्राइंगरूम में दीवान बिछल रहे। का मन में आइल ओही पर लेट गइनी। आँख बंद करत भइल कि फिर उहे सब सीन के पुनरावृत्ति होखे लागल। नींद जइसे आज बैरन भ गईल रहे। एकबार फिर से खड़ा भइनी। खिड़की चेक कइनी। सब बंद रहे। पर्दा भी जगह पर रहे। एहतियात के तौर पर ट्यूब लाईट बुझा के नाईट लैम्प जला दीहनी। बार-बार करवट बदलत रहीं। जइसे नींद आवे बुझाव रजत पास में खड़ा बाड़न। आँख खुल जाव। नाईटी पहिनले रही-सिल्क के रहे। बड़ा असुविधा लागे लागल। ब्रा खोल के सोफा पर फेंक दीहनी। धीरे-धीरे हाथ फेरे लगनी। न जाने कब मन थक गईल आ हमरा नींद आ गईल।

होंठ पर एगो विचित्र अहसास महसूस भईल। लेकिन आँख ना खुलल। जइसे उहे होठ के स्पर्श के प्रतीक्षा रहे। आँख खोल के हम सपना तूरे के ना चहनी। धीरे-धीरे ओ ओठ नीचे की ओर बढ़े लागल, गाल, कान, आँख फिर गला। हमार दूनो पैर, अपने-आप जगह बना देहलस। आह! हमरा मुँह के आवाज निकलल। कान में मंत्र जइसन आवाज आईल—"सुतल रह जान। अब मत रोक।" रोके के चाहते के रहे। हमार अंदर त ओके महसूस करे खातिर बेचैन भइल जात रहे।

इंतजार करे के ना पड़ल। हठात महसूस भइल कि शायद सपना टूट गईल। धीरे से अँख खोलनी। नाईट लैम्प

के प्रकाश रात में बड़ा ही तेज प्रकाश देत रहे। सामने रजत खड़ा होके आपन सर्ट उतारत रहस। हम कुछ कहीं कि उनकर शरीर हमरा से सट गईल। हमार दुबला पतला शरीर पूरा तरह रजत का मजबूत शरीर के काबू में आ गईल रहे। धीरे-धीर हमार आवाज गलातक रुक गईल। शरीर के सब अंग के खून में गति एक ही जगह पर केन्द्रित हो गईल। हम दूनो हाथ से उनके जोर से पकड़ के अपना ओर खींचे लगनी। तूफान क प्रवाह महसूस भईल। थोड़ा देर तक उ ओइसही सुस्त पड़ल रहले। हमरा शरीर के ईशारा पाके उ पास में लेट गईले। लेकिन पास से हमरा शरीर के आलिंगन बद्ध कइले रहस। पंद्रह बीस मिनट ओह अवस्था में पड़ला के बाद हमरा शरीर में फिर सुगबुगाहट होखे लागल। हड़बड़ा के उठ बइठनी। दिन के प्रकाश फइल गईल रहे। जल्दी से उठ के नाईटी देहपर डलनी। दउड़के बेडरूम में गईनी। ना गोलू अभी सूतल रहे। घड़ी पर नजर गईल 7 बजल रहे। साँस में साँस आईल। बेसिन में मुँह धोवे लगनी। आयना में देखनी। कंघी से बिखरल बाल ठीक कइनी। प्यास लागल रहे। फ्रिज से पानी निकाल के गटगट पी गइनी। सोफा पर बईठे जात रहनी कि मन बदल गईल। बेडरूम के बिछावन पर लेट गइनी। अपने आप हाथ गोलू के सर पर चल गईल। ओकरा केश में अंगूली फिरावे लगनी। गोलू के सुगबुगाहट महससू भईल। हम गोद में लेके ओकरा गाल पर चुमा लेहनी। उ आँख खोललस। हम ओके गोद में चिपका लिहनी।

डायरी बंद करके सुबेश लिफाफा में डल लेलने। उनकर आँख अपने आप बंद हो गईल। लागत रहे शायद दुनिया में उ पहिला बेटा बाड़न जेकरा माँ–बाप के अईसन थाती मिलल बा। माँ–बाप कभी भी ई न सोचले होई लोग कि वोलोग के गाड़ल मुर्दा अइसे जी उठी। आ उ भी अपना संतान के सामने।

आदमी के चरित्र बनावे में ओकर पेशा के काफी योगदान होला। सुबेश के काम उनका अंदर के Emotion के खत्म कर देले रहे। सब चीज के subjective देखल उनकर पेशागत जरूरत रहे।

याद ना आवे उ कब खुल के हँसले रहस। माप के बोलल आ माप के चलल सुबेश खातिर काम के जरूरत से आदत में बदल गईल रहे। दुनिया आ दुनियादारी के जानकारी उनका किताब तक ही सीमित रहे। माँ के डायरी उनका के पूरा तरह झकझोर दीहलस। डी. एच. लारेंस के लेडी चैटलीर्ज लवर उ बचपन में पढ़ले रहस। कॉलेज के समय सिनेमा आईल रहे टाइटानिक। बड़ा ही हिट भईल रहे। किशोरवय में सुबेश का बड़ा ही अच्छा लागल रहे। लेकिन वयस्क भईला के बाद उ सोचले इ सब पूरा तरह काल्पनिक कहानी ह। हो सकता पश्चिमी देशन में यदाकदा मिलल जुलत घटना घटलो होखे। लेकिन भारत में ना–ना। लेकिन अभी त लागत बा सच्चाई कल्पना से भी विचित्र होला। सुबेश के मस्तिष्क काम कईल बंद कर दीहलस। घड़ी पर नजर गईल। 7.15 वापस आवे के कोशिश करे लगलें। सुबेश चपरासी के उ समय से चल जाये के

अनुमति दीहले रहस। उनका मन में चपरासी का प्रति भक्ति जईसन भाव रहे। केन्द्रीय सचिवालय के ज्यादातर चपरासी शाम के शराब सेवन करीए के घरे जालन। साहेब जितना बड़ा, चपरासी के रुतबा भी उतना ही बड़ा। लेकिन सुबेश के चपरासी उ सब से दूर रहस। उ रात में मुहल्ला के तीन–चार गो लड़िकन के ट्यूशन देस। जवना से कुछ पईसा भी मिले आ उनके मानसिक शांति भी। भगवान भी दयावान रहस। बेटा डाक्टरी पढ़त रहे। ई सब पता लगला के बाद सुबेश के मन उनका प्रति श्रद्धाभावसे भर गईल रहे।

ब्रीफकेश ठीक कइले। बाहर निकलके दरवाजा खींच दीहले। दरवाजा अपने आप लाक हो गईल। सुनसान कॉरीडोर कुछ ज्यादा ही लम्बा लागत रहे। सीढ़ी से उतरके गाड़ी पार्किंग के ओर बढ़े लगले। तबतक ड्राइवर के नजर उनका पर पड़ल। झटक के उनका हाथ से ब्रीफकेश ले लीहलस। गाड़ी के दरवाजा खोल के खड़ा भइल। सुबेश के बईठ गइला के बाद उनका पास ब्रीफकेश रख के दरवाजा बंद क दीहलस।

काल्ह रात भर सुबेश के मस्तिष्क में तरह–तरह के विचार आवत–जात रहल। नींद भी बढ़िया से ना आइल। उनकर पालन पोषण बड़ा ही बंद परिवेश में भईल रहे। बाहर के दुनियाँ के बारे में उनकर जानकारी कर्मक्षेत्र द्वारा ही भईल रहे। माने जवना के कहल जाला third person knowledge.

स्कूल कॉलेज का दिन में भी उनकर केऊ नजदीकी ना रहे। हर जगह एगो Competition रहे। जवना उम्र में

विपरीत सेक्स के प्रति रूझान होला ओह समय उनका पर माँ के भयंकर निर्देश हावी रहे। अईसन ना रहे कि उ कवनो लड़की के सपर्क में ना आईल रहस। IIT के फाईनल ईयर के बात हऽ उनकर प्रोफेसर रहस डॉ. प्रकाश पांडेय। सुबेश के उनकर स्टाईल बड़ा ही अच्छा लागे। Carefully careless कहल जाला जवना के। कुछ नजदीकी भईला के बाद सुबेश उनका घरे आवे जावे लागल रहस। डॉ. पांडेय के पत्नी के उम्र इहे करीब 30 साल होई। प्रोफेसर साहेब परिचय करवले—किरण, इ सुबेश बाड़े। अपना बैच के सबसे होनहार बच्चा। सुबेश पैर छुवे खातिर झुकलस। तभी दू गो मुलायम हाथ अपना बाँह पर महसूस कइलन।

ना-ना, पैर छुवे के जरूरत नईखे। उनकर मृदु आवाज सुनके सुबेश खड़ा होके उनका चेहरा के तरफ निहारे लगलन। सुबेश के नजर उनके नजर पर जइसे अटक गइल। उहे बोलली—

'बइठ। हम चाय लावत बानी।'

'ना मैडम, हम चाय ना पीहिला।'

'ठीक बा तऽ कोल्ड ड्रिंक लऽ।'

'ना, उहो ना। प्लीज आप कवनो कष्ट मत करीं।'

प्रोफेसर साहेब रक्षा कइलन। 'रहे दऽ किरण। पीछे देखल जाई।' फिर सुबेश की ओर मुखातिब भइलन। गुरु शिष्य के बीच वार्तालाप कुछ ही पल में गंभीर हो गईल। सच में गुरू के बड़ा भाग्य से शिष्य मिलेला।

फिर त सुबेश के प्रोफेसर साहेब किहां आवल गईल बढ़ गईल। हलांकि प्रोफेसर साहेब के ही पहल होखे। उनका एकतरह के नशा जइसन रहे सुबेश के ज्यादा से ज्यादा पढ़ावे के। सच कहल जाव तऽ सुबेश के आई.ए.एस. बने के पीछे प्रोफेसर पांडेय के ज्यादा योगदान रहे।

ओह दिन होस्टल में सुबेश के रूम मेट ना रहे। सुबेश के सबेरही से मन अच्छा ना लागत रहे। डॉ. पांडेय भी बाहर गईल रहस। तरह-तरह के विचार आवत-जात रहे सुबेश का दिमाग में। मन करे एक बार प्रोफेसर साहेब किहाँ जाये के। मैडम के देखे के बड़ा ईच्छा होत रहे। तभी बारीश शुरु हो गईल। वर्षा एहुंगा आदमी में रोमान्स ला देला। सुबेश के तऽ उम्रे रहे।

बारीश थमल सुबेश निकल गइलन। डोर बेल के स्वीच पर अंगूली रखलन। दबावे के पहीले थोड़ा घबराहट भईल। अंदर से आवाज सुनाईल।

के हऽ।

सुबेश, मैडम।

दरवाजा खोल के उ सामने अइलीं। सैम्पू कईल बाल कंधा पर फैलल रहे। ढीला नाईट सूट रहे नीचे। उनकर ऊँचाई कम रहे। सुबेश अंदाज कईले 4 फूट 8 इंच। ई ड्रेस में उ ओरियेन्टल लड़की जइसन लागत रहस। उम्र त 21-22 से ज्यादा ना लगात रहे। सुबेश को होंठ सुखे लागल।

‘कम ईन।’

सुबेश धीरे–धीरे अंदर भइलन। तभी वर्षा फिर से शुरू हो गईल। कहलजाला भगवान खुश होलन त वर्षा बरसावेलन। उनके पीछे–पीछे सुबोध बालक के तरह सुबेश ड्राईगरूम में गइलन। एगो सोफा की ओर ईशारा कर के उ पास वाला सोफा पर बइठली। दूनो सोफा के बीच एगो छोट टेबुल रहे साईड टेबलु। जवना पर दू गो गिलास रहे। एगो बर्फ के बर्तन रहे बाल झटक के किरण मैंडम कहली—

'Like to have some drink'

सुबेश एकटक देखत रह गईलन। आवाज न निकलल। उ उठलीं। सुबेश का सामने से चल के फ्रिज के पास गईली। एगो बोतल ले के अइलीं। बइठ के बोतल खोललीं। दूनो गिलास में थोड़ा–थोड़ा डाल के बोतल के ढक्कन बंद कर रख दीहली। बर्फ के बर्तन से फॉर्क से पकड़ के बर्फ के टुकड़ा दूनो गिलास में डाल के पूछली Water or Soda। सुबेश होस्टल के फंक्शन बगैरह में दू एक बार बीयर पीयले रहस। हलांकि उनका कभी भी अच्छा ना लागे। ह्विस्की कभी ना पीयले रहस। उनकर बाकी लोग जइसन सोच रहे बीयर शराब ना होला। लेकिन आज उनका पास कवनो विकल्प ना रहे। बड़ी कष्ट से बोल पवलन सोडा। किरण मैडम फिर उठलीं। फ्रिज से एगो बोतल ले अइलीं साथ में ओपेनर भी। बईठ के ओपेनर से कार्क खोलली। हल्का सा एगो आवाज भईल आ बोतल के अंदर से बुलबुला निकल के मुँह से ऊफने लागल। धीरे–धीरे गिलासन में भर दीहलीं। एगो गिलास उठा के

सुबेश के ओर बढ़वली। सुबेश के तऽ होश हवाश गुम हो गईल रहे। उ अपना के कंट्रोल करे के कोशिश कइलन आ हाथ से गिलास पकड़लन। उ दोसर गिलास हाथ में लेके सुबेश का गिलास से टकरा के कहली चियर्स यंग मैन। सुबेश तकलन। किरण मैडम का चेहरा पर मुस्कान फईलल रहे। सुबेश के कांपत आवाज निकलल चियर्स।

सुबेश नवसीखुआ तऽ रहस ही। फटाफट आधा गिलास पी लीहलन। तब तक किरण अभी दू तीन घूंट ही ले ले रहस। दस पंद्रह मिनिट में सुबेश पर शुरुर चढ़े लागल।

उनकर अंदर के डर हटे लागल। उनका बोले के ईच्छा करे लागल। लेकिन अभी भी हिम्मत साथ ना देत रहे। किरण शायद समझ गईल रहस उनकर अवस्था बोललीं— हाँ सुबेश, तहरा पता ना रहल जे प्रोफेसर साहेब नईखीं।

'ठीक से ना रहल मैडम। तभी त खबर लेवे आईल रनीह।'

'काहे? उनका अनुपस्थिति में ना आवे के चाहीं का।'

'ना-ना मैडम। हमरा त आपके देखे के बड़ी ईच्छा होला, लेकिन।'

'लेकिन का? एकरमाने मन में कुछ दोसर बा तहरा?'

'दोसर माने? सुबेश चिहुंकलन।'

'ओकर माने तऽ तूही बता सकेल।' किरण कहली

'अच्छा ल खतम कर। एगो लेके कबसे बइठल बाड़।'

सुबेश फटाक से गिलास खाली कर दीहलन। मैडम गिलास में फिर से ह्विस्की सोडा भर दीहली। 'अब धीरे-धीरे, लऽ सुबेश।' 'किरण आपन गिलास होठ से लगा के बोललीं देख हम दू घंटा से पीयतानी लेकिन अभी तक दू पेग नईखे भईल।'

सुबेश पर चढ़ल जात रहे। उ कहले—'आप त मैडम लेडी बानी ना'

किरण खिलखिला के हँस पड़ली—'अच्छा, त तू मर्द बाड़। ऊ हो देखहीं के बा।'

सुबेश का महसूस भईल—आज काम बने वाला बा शायद। उ उठ के खड़ा भईलन। पेशाब महसूस होत रहे कानी अंगूली दीखवलन। मैडम Toilet के तरफ ईशारा कइलीं। सुबेश डगमगात पैर से ओने गइले। बड़ी मुश्किल से जिपर खोललन। लागत रहे आज रावण वाला पेशाब होता। एने माथा चक्कर देत रहे। कईसहुं पैन्ट ठीक कईलन। जिपर बंद करत-करत ड्राईंग रूप में अइलन। पैर ठीक से पड़त ना रहे। कइसहूँ मैडम का पास सोफा पर बइठलन।

'का भईल, सुबेश।'

किरण पूछलीं।

'रउरा नइखे बुझात।' सुबेश उनका ओर ताकके कहलन।

'लागता तहरा नशा हो गईल बा।'

'नशा त रउरा के पहिला दिन देखला के बादे शुरू हो गईल रहे।'

किरण चुप।

सुबेश के बइठे में असुविधा लागत रहे। उ लेट गईले सोफे पर। आँख बंद होखे लागल। उनका लागल किरण उनकर सर अपना गोद में ले लीहली। उनकर अँगूली सुबेश के बाल सहलावे लागल रहे।

सुबेश के नींद खुलल त खुद के फर्श के दरी पर पवलन उ पास के सोफा पर लपक के बइठलन। घड़ी देखलन छः बजल रहे। थोड़ा समय लागल मनस्थ होखे में। एने ओने देखे लगले। तभी किरण मैडम अईलीं। साड़ी पहीनले रहस।

‘कईसन लागता सुबेश?’

‘ठीक बा मैडम।’

फिर कहलन—‘हम चली मैडम।’

‘ना कुछ खा लऽ।’

नौकरानी के आवज दीहलीं। उ एगो प्लेट ले आईल।

पकोड़ी रहे। सुबेश के पकौड़ी बड़ा अच्छा लागे। अभी त भूखो लागल रहे। उ खाये लगलन। खतम करके उठ खड़ा भईलन, किरण मैडम कहलीं ‘‘प्रोफेसर साहब के कुछ कहे के रहे का?’’

‘ना मैडम। कुछ ना।’ सुबेश कह ना पवले—‘हम त आपेसे मिले आईल रनीह।’

रास्ता पर आके मुड़ के देखलन—‘मैडम मुस्कुरात रहलीं। आ हाथ हीलावत रहलीं।’

सुबेश का दोसर घटना याद आईल। मसुरी ट्रेनिंग के समय। एगो पंजाबी लड़की रहे। रेवेन्यू सर्विस के। बड़ा ही फ्लर्ट किस्म के । सब लोग सोचे परविंदर सिविल सर्विस

पास भईल कइसे। दोसर कवनो लड़की से ऊ बातों ना करे। सब समय लड़ीकन के साथ ही गप्प लड़ावे। कई बार फैकल्टी भी ओके डांट लगावे सब।

दिसम्बर के छुट्टी में सबका घरे जाये के रहे। पार्टी होत रहे। ड्रिंक भी पार्टी के हिस्सा रहे। लेकिन सभे सबसे अच्छा दीखावे के चेष्टा में रहे। माने गिलास हाथ में रहे मात्र। पीये के कोशिश केहूना करत रहे। हठात् परविन्दर सुबेश का पास आके बईठ गईल।

मुस्कुरा के तकलस। थोड़ा इंतजार करके कहलस—

'का बा तहरा गिलास में सुबेश।'

'बीयर'

'लेडीज ड्रिंक। लेट मी हैव ईट।'

एक झटका में सुबेश के हाथ से ऊ गिलास ले लिहलस आ गटक गईल। सुबेश के आँख फैलल रह गईल।

'Don't' get upset. I am fetching something for you.

(उदास मत हो बच्चा हम तहरा खातिर दोसर ला देतानी।)

उ उठ के गईल काउन्टर के पास। लौट के आईल तऽ दूनों हाथ में दूगो भरल गिलास रहे। एगो सुबेश के पकड़ा के कहलस—

'चियर्स'!

ना जाने का रहे ऊ लड़की में। सुबेश मंत्रमुग्ध जईसन पीये लगलन। एने पार्टी धीरे-धीरे खुले लागल रहे। छोट-छोट ग्रुप मे बँट गइल रहे लोग। कहीं जोर से त कहीं धीरे-धीरे फुसफसाहट।

गिलास खतम कर के परमिन्दर कहलस—'कईसन लागता सुबेश' जवाब में सुबेश खाली ओकरा ओर ताके लगलन। 'Come with me' परविन्दर के आवाज में जइसे जादू रहे। परविन्दर का पीछे-पीछे सुबेश पार्टी छोड़ के चल दीहलन। परविन्दर होस्टल में आके आपन कमरा खोललस। सुबेश के ईशारा कर के अंदर बुलवलस। दरवाजा खुलले रहे।

परविन्दर सुबेश के अंकवारी में जकड़ लीहलस आ झपाझप चुमें लगलस। करीब आधा घंटा बाद दूनो कपड़ा ठीकठाक करके निकललन। सुबेश के हिम्मत ना भईल पार्टी में जाये के। उ सीधे अपना कमरा में चल गईलन। कब नींद आ गईल।

दोसरा दिन उनकर रूम मेट कहलस—'अरे यार, तू कब पार्टी छोड़ के चल गईल? जान-ताड़ परविन्दर पार्टी में जान डाल दीहले रहे। सबका के नचवा दीहलस।'

सुबेश अपना दिमाग पर दबाव डललन। 'कब भईल इ सब?' अरे यार, तू सांझही घर में घुस गईल का? सब लोग डेराईल-डेराईल पीयत रहे। जइसे प्रसिंपल गइलन सब लोग शुरू हो गईल। परविन्दर पहिले त गाना शुरू कईलस उ वाला..'

'कवन गाना?'

कजरारे-कजरारे तेरे कारे कारे नयना। बस सब लोग अपना मुखौटा से बाहर आ गईल। जेकरा जे बुझाईल करे लागल। बस मौज हो गईल। आ तू बुरबक आ के सुत गईल।

सुबेश कईसे बतावस कि परविन्दर उनके कौन सुख दीहले रहे।

नियमानुसार दफ्तर में रहस। कंप्युटर खोल के आपन मेल चेक कइलन। जहाँ जईसन जरूरत रहे आपन टिप्पणी या आदेश देके मेल फारवर्ड कर दीहलन। तभी डाक फोल्डर रख गईल चपरासी। उनके नमस्कार के जवाब देके सुबेश कंप्युटर से बिना ध्यान हटवले कहलन—

'का हाल बा मिश्रा जी?'

'बढ़िया सर।' कहके चपरासी मिश्रा कमरा से निकल गईलन।

ऑफिस में पहिला धक्का संभाल के सुबेश Appointment पर नजर दीहलन। आज कुछ खास ना रहे। इन्टरकॉम से Secretary के नम्बर मिलवलन। ओने से आवाज आईल।

'यस सर।'

'ऊ ड्राफ्ट कतना दूर बा।'

'तैयार बा सर।'

'शाम तक भेज हमरा पास।'

'सर, काल्ह तक समय दीहल जाव।'

सुबेश समझ गईलन अभी ड्राफ्ट (मसौदा) तैयार नइखे। उ थोड़ा भारी आवाज में कहलन—

'काल्ह सुबह हमरा मेल पर होखे के चाही।'

'O.K. सर।'

सुबेश फ्लास्क से कॉफी ढारे लगलन। काफी पियत का मन में आईल। ड्रावर से उ लिफाफा निकललन। नोटसीट

वाला हिस्सा हटा के Petition वाला पन्ना निकललन। पीला हो गईल रहे कागज। पढ़े लगलन। पहीला पन्ना पर कुछ अईसन ना रहे। दोसरा पन्ना से अर्जी के बयान शुरू भईल—

2. हमार शादी श्री अजितेश लाहिड़ी के साथ 13 दिसम्बर, 1983 के हिन्दू रीति रिवाज के अनुसार संपन्न भईल बा। ओकरा बाद हमनी दूनो आदमी पति–पत्नी के तरह एक घर में रहत बानी।

3. 25 दिसम्बर, 1984 के हमनी के एगो पुत्र भईल।

4. हमनी के बैवाहिक जीवन में कवनो तरह के समस्या ना रहल ह।

5. करीब 7 साल पहीले हमरा पड़ोस में रहे वाला एगो दंपति के साथ हमनी के नजदीकी बढ़ल। उ सब हमनी के करीबी उम्र के रहे आ उनके बच्चा हमनी के बच्चा से करीब 1 वर्ष अधिक के रहे।

6. सामान्य पड़ोसी के तरह हमनी का कभी कभार घुमेफिरे भी एकसाथ जाई स। एक दूसरा के इहाँ आईल भी अबाध रहे।

7. हमार पति श्री अजितेश लाहिड़ी अपना रिसर्च वर्क में कुछ ज्यादा ही व्यस्त रहेलन, हलांकि घर की ओर उ पर्याप्त समय देवे लन।

8. जइसे–जइसे हमार बच्चा बड़ा होत जाता, हमरा पास समय के उपयोग नईखे लागत। हमरा बड़ा ही खाली–खाली लागे लागल।

9. हम डायरी लिखे के शुरू कईनी। डायरी में हम कुछ आपन बीतल आ कुछ रोमांटिक कल्पना (फैन्टसी) मिल मिला के लिखे लगनी। कवनों-कवनों दिन लिखीं आ बाकी दिन पढ़ीं।

10. डायरी हमार सबसे प्रिय आ खास रहल। एसे हमरा एकतरह के शांति मिले। हमार खालीपन भरे लागल।

11. हम आपन डायरी छुपा के रखीं काहे कि ओमे के कवनों बात हम अपना सिवा दोसरा के साथ बांटे के ना चाहीं—अजितेश से भी।

12. करीब दू महीना पहीले हमरा लागल कि अजितेश हमरा हर बात पर मीन मेख निकालत बाड़न। उनका मुँह से अईसन भाषा निकले लागल जवन उनका स्वभाव के विरुद्ध रहे। पहीले तऽ हम ध्यान ना देहनी। लेकिन उनकर व्यवहार हमरा के ज्यादा दिन निश्चिन्त ना रहे दीहलस।

13. दिन प्रति दिन अजितेश के व्यवहार हमरा आ बच्चा के प्रति बूरा होखे लागल बा। पिछली होली में हमार ऊ पड़ोसी होली खेले आईल रहस। ना जाने कईसे हमार पैर फिसल गईल। अजितेश देखत रहलन लेकिन आगे ना बढ़लन। उ पड़ोसी भाग के हमरा के उठवलन आ सहारा दे के अन्दर ले अईलन। उनका गईला के बाद अजितेश खुल गईलन। हमरा के साफ-साफ कहलन कि उनका पक्का विश्वास बा कि इहे ऊ आदमी बा

जवना का साथ हमार नाजायज संबंध चल रहल बा। हमनी के बीच भयंकर झगड़ा के बाद ऊ बतवलन कि हमार डायरी उ पढ़ चुकल बाड़न।

14. हमरा हजार सफाई के बाद भी अजितेश सामान्य नइखन होत। हमनी के जीवन में विष घुल चुकल बा। एकर प्रभाव सबसे अधिक उनके पर हो रहल बा। उनकर स्वास्थ्य दिन पर दिन गिर रहल बा आ हमेशा झुँझआईल रहत बाड़न। जवना से हमार आ हमरा बच्चा पर भयंकर बुरा असर पड़ रहल बा।

15. हम बहुत सोच-विचार के ई निर्णय कईनी ह कि हमनी का बीच शादी शुदा रहला के मतलब नईखे बाचल। काहे कि शादी के सर्वप्रमुख आधार निर्बाध बातचीत हमनी के बीच नईखे रह गईल। एह से हम इ तलाक के अर्जी दाखिल कर रहल बानी।

16. तलाक के बाद हम चाहब कि बच्चा हमरा पास रहो। अजितेश यदि चाहस त ओकरा से मिल सकेलन।

17. तलाक के बाद अजितेश दूसरा शादी खातिर स्वतंत्र बाड़न।

18. हम कवनो तरह के compensation claim करत नइखी।

उक्त आधार पर मान्य अदालत के हमार अनुरोध बा कि हमार तलाक के अर्जी मंजूर कर के हमनी दूनो आदमी के स्वतंत्र रूप से स्वस्थ जीवन बितावे में सहयोग करे।

सुष्मिता सान्याल

बारह

आज संसद में परिवार अदालत (संशोधन) विधेयक पर बहस होखे के रहे। मंत्री जी के सामने सुबेश बईठल रहस। मंत्रीजी के भाषण से बहस शुरु होखे के रहे। जईसन प्रथा रहे भाषण के सब भाषा में अनुवाद भी उपलब्ध होखे के चाहीं। अभी मंत्री जी से अनुमोदन मिलला के बाद ही भाषण अनुवाद शाखा में जाई। फिर चार बजे तक संसद सचिवालय में चल जाई। इह त सरकारी तंत्र ह। कहीं भी छोट देरी सारा तंत्र के रोक सकेला। मंत्री जी पढ़त रहस। सुबेश भी आदतन उनके स्पीड से पढ़त रहस।

परिवार अदालत कानून 1984 में पारित भईल रहे। मुख्य रूप से परिवार विवाद के निपटारा खातिर। समाज में परिवार के महत्व पर कहे के जरूरत नईखे। एक पंक्ति में कहल जाव त समाज परिवार के ही बड़ा आकार ह। परिवार के नींव पति-पत्नी संबंध से शुरू होला। आ, हमरा कहे में संकोच नईखे होत, ओही जा खतम होला।

समय के साथ पति-पत्नी संबंध के मापदंड भी बदले ला। लेकिन सारा दुनिया में एक पति-एक पत्नी सिद्धांत रूप में मानत आवता। खास कर के भारतीय समाज एह बारे में बड़ा ही अचल बा। लेकिन ई आदर्श बा वास्तव ना। आज जब व्यक्ति स्वाधीनता हर तर्कसे उपर देखल जाता, पति-पत्नी में मतविरोध रोग ना बल्कि स्वाभाविक समझे के चाहीं।

लेकिन समाज के एगो आपन नियम बा। हमनी का समाज के प्रतिनिधि बानी। एहसे जरूरी होजाता कि व्यक्ति स्वाधीनता आ सामाजिक अवस्थान के बीच एगो balance रखल जाव। पति-पत्नी के एक साथे रहल जरूरी बा। उनका अलग होखे के अधिकार पर काबू रखल भी जरूरी बा। आप सब के आश्चर्य लागत होई कि हम कुछ उल्टा कह रहल बानी। ना! खाली किताबी बात पर बहस से नईखे चले के। वास्तविकता से नजर मोड़ के कवनों समाज जीवन्त ना रह सके। हम दृढ़ निश्चय से कह सकऽतानी कि भारतीय समाज जीवन्त बा, रहे, आ रही।

एक पत्नीवाद चला के राम भगवान बनले तऽ भारतीय समाज कुन्ती आ द्रौपदी के प्रतिब्रता के श्रेणी में रखलस। आज के तारीख में पति-पत्नी के बीच सबसे बड़ा समस्या extra marital affairs बा। कभी वास्तव में तऽ कहीं-कहीं काल्पनिक। Extra-Marital affair शादी शुदा जीवन में कभी भी, कहीं भी, घट सकेला। ई जिन्दगी के गतिमति बदल देला चाहे एकरा बाद शादी रहे या टूट जाय। काहे कि दूनो पक्ष में कवनो एकरा के भूल ना सके। जवना पक्ष का साथ इ घटेला ओकरा उपर दोषी भाव, एकाकीपन confusion आ दिशाहीनता के भूत सारा जीवन खातिर धर लेला। दूसरा पक्ष पर भी ए भूत के छाया बराबर रूप से पड़ेला।

दोसरा तरफ Extra Marital Affair में आनंद के प्रति आकर्षण भयंकर होला। ई क्षणिक आनंद से प्रेरित ना

होला। एकरा में रोमांच होला, रोमांस होला, आदर्श होला, पौराणिकता होला, आ सबसे बड़ा होला emotion एकरा में सेक्स होला लेकिन ओकर महत्व ओतना ना होला। बल्कि एकरा में दर्द आ डर होला। आउर होला जीये के तीब्र ईच्छा।

अधिकांश व्यक्ति शादी इहे सोच के करेला कि Extra Marital Affairs ना आई उनके जिंदगी में। लेकिन सच इ बा कि दूनो पक्ष या कम से कम ओमें से एक का जिदंगी में ई घटेला। एहसे ई ठीक कईल ज्यादा जरूरी बा कि इ काहे घटल।

Extra Marital तीन कारण से घट सकेला—

(1) दूनो में से कवनो पक्ष के सामान्य जीवन गति में रुकावट।

(2) चाहत से उत्पन्न दिशा हीनता।

(3) कवनों तरह के जाल में फँसल।

एकबार सही कारण पता चल गईला पर समाधान कठिन नईखे। प्यार के मलहम इ तीनो घाव के भर सकता।

मंत्री जी थोड़ा दम लीहलन। देखलन सबका चेहरा पर हल्का मुस्कान फइल गईल बा शुरु कईलन—

देखनी सभे। 'प्यार' शब्द मात्र से कईसन सुकून मिलेला। प्यार सही व्यक्ति के तलाश ना ह, बल्कि सही संबंध तैयार कईल हऽ। प्यार पैदा कईल जाला। तऽ शादी के समय के प्यार से ज्यादा महत्वपूर्ण बा शादी शुदा जिंदगी में प्यार के फलन। महत्वपूर्ण बा ई ध्यान रखल कि दूनो पक्ष के बीच प्यार आ प्यार के हर क्षण में अनुभूति एक पंक्ति में हम

कहब वैवाहिक जीवन में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु बा संवाद (Communication) ।

पति–पत्नी के बीच संवादहीनता ही वैवाहिक जीवन के सबसे बड़ा शत्रु बा।

तलाक के बाद भी पति–पत्नी एक दूसरा के ना भूल पावेला। एकसाथ बीतल हरेक क्षण उनके झकझोरत रहेला। लेकिन दुर्भाग्यवश तलाक से लवटे के कवनो रास्ता ना बा। अतः तलाक कानून के वर्तमान स्वरूप ठीक–ठीक ही बा। तलाक चाहेवाला दंपत्ति के कुछ समय अनिवार्य रूप से मिले के चाही। एक दूसरा के बिना यदि उ सब एक साथ रह पावे तभी तलाक मिले के चाही। हमार दोसर प्रस्ताव बा एक–एक साल के अवधि में दूनो में कवनो पक्ष के अवस्था मुताबिक आर्थिक सहायता सरकार के तरफ से कईल जाई। एकरा खातिर एगो विशेष कोष बनावल जाई।

हम मुख्य रूप से एही संशोधन खातिर बिल पेश करतानी।